सूक्ष्म-सांपराय गुणस्थान

Presentation Developed By: Smt Sarika Vikas Chhabra

मंगलाचरण

सिद्धे जिणिंदचंदे, आयरिय-उवज्झाय-साहुगणे ।
वंदिय सम्मद्दंसण-चरित्तलद्धिं परूवेमो ॥1॥

सूक्ष्म-सांपराय का सार

- प्रथम कांडक का वर्णन: यहाँ लोभ के अंतरायाम का नाश किया जाता है | इसमें द्रव्य देकर गोपुच्छ बनाने के लिए प्रथम कांडक के द्रव्य का प्रयोग किया जाता है | अतः प्रथम कांडक के पतन होने के पहले तक अंतर स्थिति और द्वितीय स्थिति में एक गोपुच्छ नहीं होता है | अंतिम फाली का पतन होने पर गुणश्रेणी के ऊपर का सर्व द्रव्य एक गोपुच्छ में बन जाता है |
- द्वितीय कांडक से द्वि-चरम कांडक का वर्णन: आगे प्रत्येक कांडक में अंतर्मुहूर्त प्रमाण स्थिति को नष्ट किया जाता है | शेष कार्य पूर्ववत चलते रहते हैं |
- अंतिम कांडक का वर्णन: अंतिम कांडक में सूक्ष्म-सांपराय के शेष काल के ऊपर रही सर्व स्थिति को घात के लिए ग्रहण करके स्थिति सत्त्व समाप्त किया जाता है | अंतिम कांडक के अनंतर समय से कृतकृत्य वेदक हो जाता है |
- कृतकृत्य कृष्टि वेदक: इस काल में मात्र कृष्टियों का उदय आता रहेगा और इस तरह से एक अंतर्मुहूर्त में सर्व द्रव्य का उदय होकर सारा लोभ समाप्त हो जाता है |
- उदय कृष्टियों का वर्णन: प्रथम समय से लेकर अंतिम समय तक प्रत्येक समय में अनंत गुणा हीन कृष्टियों का उदय आता है | यह क्रम प्रथम से अंतिम समय तक जानना |

से काले सुहुमगुणं, पडिवज्जदि सुहुमकिट्टिठिदिखंडं । आणायदि तद्दव्वं, उक्कट्टिय कुणदि गुणसेढिं ॥583॥

- अन्वयार्थ: (से काले) अनिवृत्तिकरण का काल समाप्त होने पर अनन्तर समय में (सुहुमगुणं) सूक्ष्मसांपराय गुणस्थान को (पडिवज्जदि) प्राप्त होता है।
- (सुहुमकिट्टिठिदिखंडं) सूक्ष्मकृष्टियों का स्थितिकांडक घात करता है, (तद्दव्वं) सूक्ष्मकृष्टियों के द्रव्य का (उक्कट्टिय) अपकर्षण करके (आणायदि) लाता है और (गुणसेढिं) गुणश्रेणि (कुणदि) करता है ॥583॥

सूक्ष्म सांपराय गुणस्थान

अनंतर समय में सूक्ष्म कृष्टियों का अपकर्षण करके, उसका वेदन करने वाला क्षपक जीव सूक्ष्मसांपराय गुणस्थान को प्राप्त होता है ।

यहाँ संज्वलन लोभ की जितनी अंतर्मुहूर्त मात्र स्थिति है, उसका संख्यातवां भाग स्थितिकांडक आयाम का प्रमाण है ।

सूक्ष्म-कृष्टियों की प्रतिसमय अनुभाग अपवर्तना प्रवृत्त होती है ।

शेष कर्मों की गुणश्रेणि, स्थितिकांडक, अनुभागकांडक पूर्ववत् प्रवृत्त हैं ।

गुणसेढि अंतरट्ठिदि, बिदियट्ठिदि इदि हवंति पव्वतिया । सुहुमगुणादो अहिया, अवट्ठिदुदयादि गुणसेढी ॥584॥

- अन्वयार्थ: (गुणसेढि) गुणश्रेणि, (अंतरट्ठिदि) अंतर स्थिति और (बिदियट्ठिदि) द्वितीय स्थिति (इदि) ऐसे (पव्वतिया) तीन पर्व (हवंति) होते हैं।
- (सुहुमगुणादो) सूक्ष्मसांपराय गुणस्थान के काल से (अवट्ठिदुदयादि गुणसेढी) उदयादि अवस्थित गुणश्रेणि-आयाम (अहिया) अधिक है ॥584॥

www.JainKosh.org

सूक्ष्म-कृष्टि के अपकृष्ट द्रव्य को देने के तीन पर्व (स्थान) हैं-

सूक्ष्म कृष्टि का अपकृष्ट द्रव्य

1) गुणश्रेणि

- उदय निषेक से जिस निषेक तक असंख्यात गुणित क्रम से द्रव्य दिया जाता है, उतना आयाम गुणश्रेणि का है ।

2) अंतर स्थिति

- गुणश्रेणि आयाम के ऊपर जितनी शेष अंतरायाम रूप स्थिति है, उनमें भी सूक्ष्म कृष्टि का अपकृष्ट द्रव्य दिया जाता है । यह अंतर स्थिति कहलाती है। इसमें द्रव्य देने से अंतरायाम नष्ट हो जाता है ।

3) द्वितीय स्थिति

- अंतर स्थिति के अनंतर निषेक से उपरितन सर्व स्थिति; द्वितीय स्थिति कहलाती है । अपकृष्ट द्रव्य यहाँ भी दिया जाता है ।

सूक्ष्म कृष्टि की गुणश्रेणी

यहाँ सूक्ष्म कृष्टि की उदयादि अवस्थित गुणश्रेणी बनायी जाती है।

इस गुणश्रेणि का आयाम सूक्ष्मसांपराय काल + $\frac{\text{सूक्ष्म सांपराय काल}}{\text{संख्यात}}$ है।

यह आयाम ज्ञानावरणादि की गुणश्रेणियों से अंतर्मुहूर्त हीन है ।

देय द्रव्य

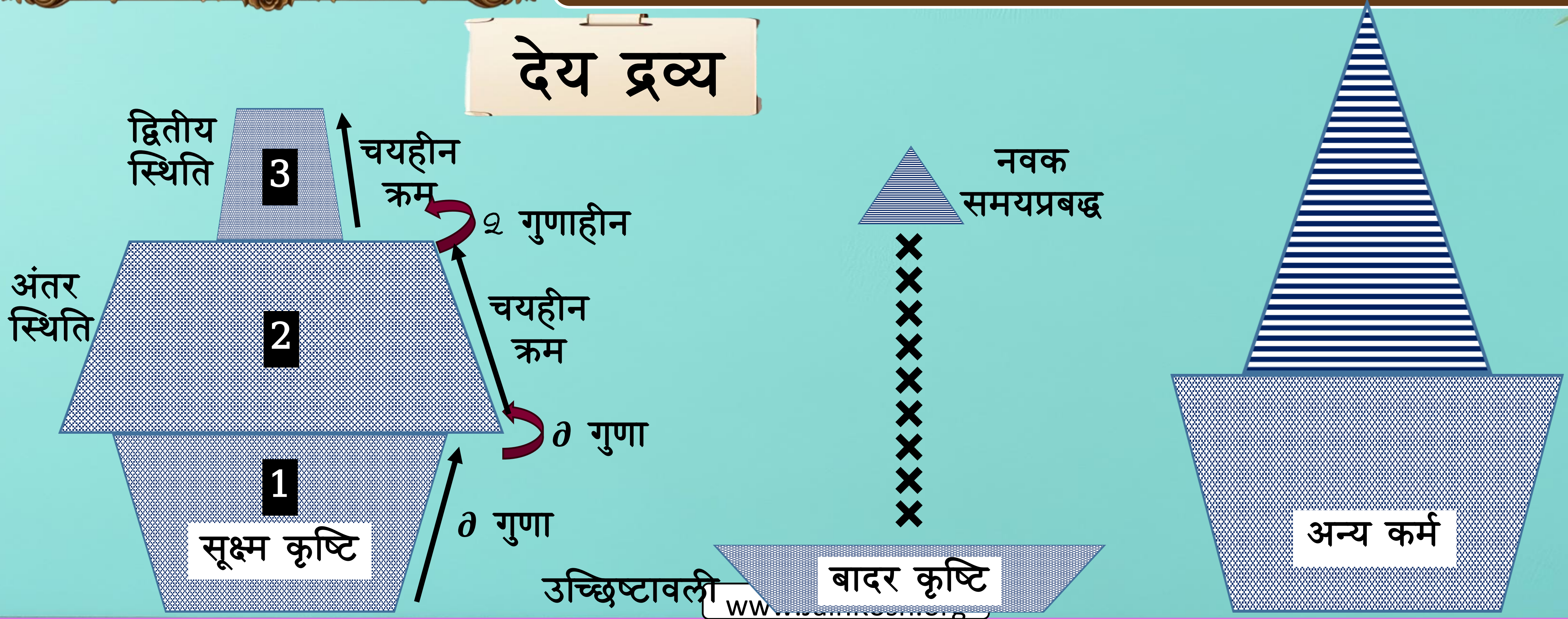

ओक्कट्टिदइगिभागं, गुणसेढीए असंखबहुभागं ।
अंतरहिदविदियठिदी, संखसलागा हि अवहरिया ॥585॥
गुणिय चउरादिखंडे, अंतरसयलट्ठिदिम्हि णिक्खिवदि ।
सेसबहुभागमावलिहीणे विदियट्ठिदीए हु ॥586॥

- अन्वयार्थ: (ओक्कट्टिदइगिभागं) अपकर्षित द्रव्य के एक भाग द्रव्य को (गुणसेढीए) गुणश्रेणी में देता है,
- (असंखबहुभागं) अवशेष असंख्यात बहुभाग द्रव्य को (अंतरहिदविदियठिदी) अंतरस्थिति का द्वितीय स्थिति में भाग देने पर (संखसलागा) जो संख्यातप्रमाणरूप शलाका आती है उससे (अवहरिया) भाग देकर (चउरादिखंडे) संदृष्टि की अपेक्षा चार से (गुणिय) गुणा करके आया हुआ द्रव्य (अंतरसयलट्ठिदिम्हि) अंतर की सर्व स्थितियों में (णिक्खिवदि) निक्षेपण करता है और
- (सेसबहुभागं) शेष बहुभाग (आवलिहीणे) अतिस्थापनावलि से न्यून (विदियट्ठिदीए) द्वितीय स्थिति में देता है ॥585-586॥

www.JainKosh.org

सूक्ष्म कृष्टि के अपकृष्ट द्रव्य का विधान

अपकृष्ट द्रव्य = स∂१२– / 7|ओ

असंख्यातवा भाग द्रव्य – गुणश्रेणी में

शेष बहुभाग द्रव्य के दो भाग

एक भाग = स∂१२– / (7|ओ प/∂)

अंतर स्थिति	द्वितीय स्थिति
इसमें बहुभाग द्रव्य का संख्यातवा भाग देते हैं	इसमें संख्यात बहुभाग द्रव्य को देते हैं

द्रव्य के बंटवारे हेतु यह अल्प-बहुत्व है –

पद	अल्प-बहुत्व	गुणकार की संदृष्टि
गुणश्रेणी का प्रमाण	स्तोक	–
अंतर स्थिति का प्रमाण	संख्यात गुणा	४
स्थितिकांडक आयाम	संख्यात गुणा	४ । ४
स्थितिकांडक के नीचे शेष स्थिति	संख्यात गुणा	४ । ४ । ४
संपूर्ण द्वितीय स्थिति	+	६४ + १६ = ८०

शलाका

$$= \frac{\text{द्वितीय स्थिति}}{\text{अंतर स्थिति}} = \frac{८०}{४} = २०$$

www.JainKosh.org

द्रव्य के बंटवारे हेतु अल्प-बहुत्व

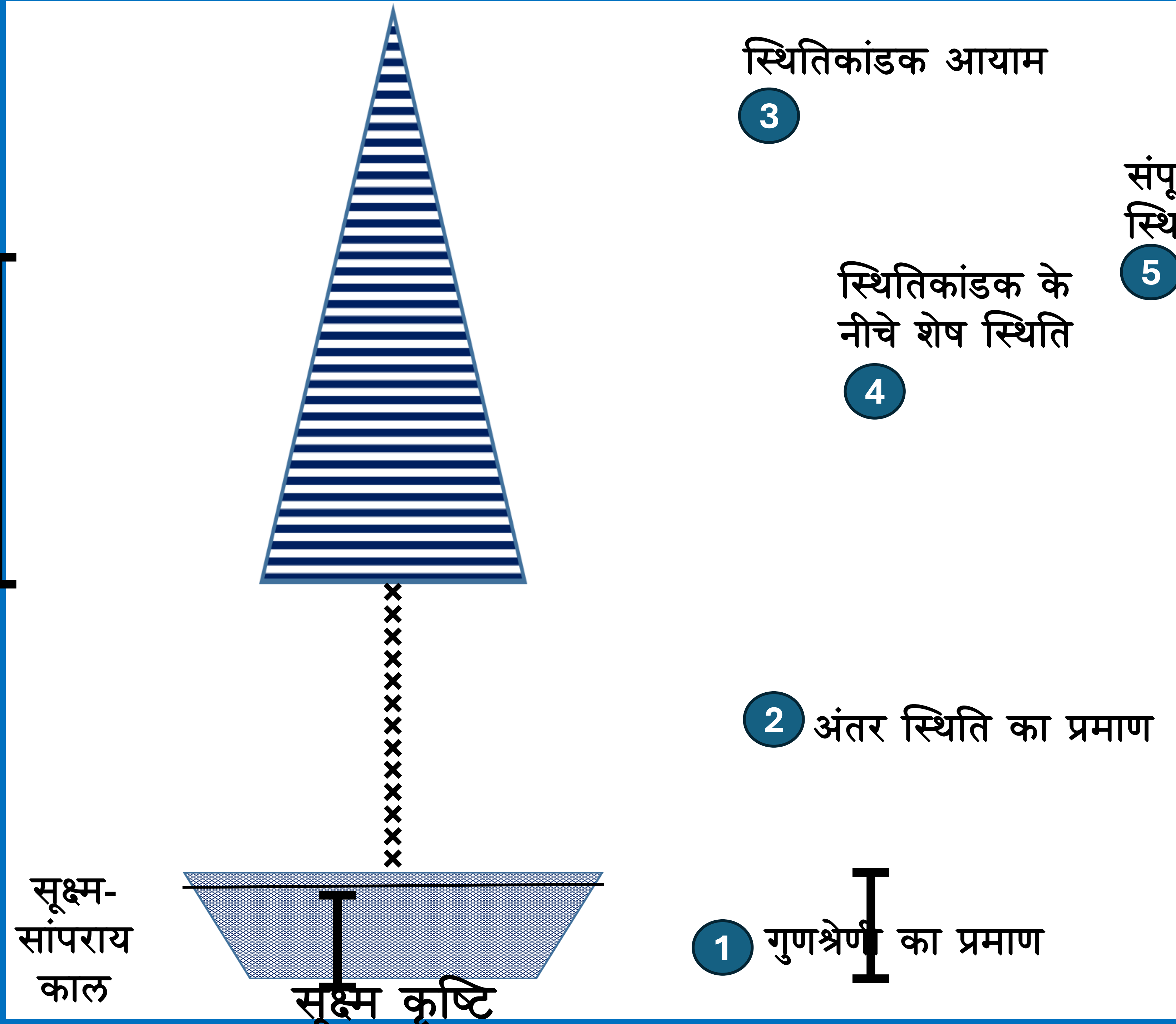

अंतरपढमठिदि त्ति य, असंखगुणिदक्कमेण दिज्जदि हु । हीणकमं संखेज्जगुणूणं हीणक्कमं तत्तो ॥587॥

- अन्वयार्थ: (अंतरपढमठिदित्ति य) अंतरायाम की प्रथम स्थिति तक (असंखगुणिदक्कमेण) असंख्यात गुणितक्रम से (दिज्जदि हु) द्रव्य दिया जाता है।
- उसके ऊपर (हीणकमं) हीनक्रम से, उसके अनन्तर (संखेज्जगुणूणं) संख्यातगुणित हीन, (तत्तो) उसके अनन्तर (हीणक्कमं) हीनक्रम से द्रव्य दिया जाता है ॥587॥

दीयमान द्रव्य का क्रम

अपकृष्ट द्रव्य वर्तमान उदय समय से गुणश्रेणीशीर्ष तक असंख्यात गुणा क्रम से दिया जाता है ।

शीर्ष के ऊपर अंतरायाम का प्रथम निषेक है । वहाँ भी असंख्यात गुणा द्रव्य दिया जाता है ।

इसके ऊपर अंतर स्थिति के द्वितीय निषेक से अंतिम निषेक तक चयहीन क्रम से द्रव्य दिया जाता है ।

इसके ऊपर द्वितीय स्थिति के प्रथम निषेक में संख्यात गुणाहीन द्रव्य दिया जाता है ।

इसके ऊपर अतिस्थापनावली के पूर्व तक एक-एक चयहीन क्रम से द्रव्य दिया जाता है ।

गुणश्रेणि में द्रव्य देने का विधान जैसा पूर्व में सर्वदा दिया है, वैसे असंख्यात गुणा क्रम से यहाँ भी देना ।

अंतर स्थिति का द्रव्य

गच्छ = 2૨।४, द्रव्य = $\frac{\text{स ∂१२ । ४}}{\text{7 । ओ । २०}}$	
मध्यमधन = $\frac{\text{अंतर स्थिति द्रव्य}}{\text{अंतर्मुहूर्त प्रमाण अंतरायाम}}$	मध्यमधन = $\frac{\text{स ∂ १२ । ४}}{\text{7 । ओ । २० । 2૨।४}}$
चय = $\frac{\text{मध्यमधन}}{\text{निषेकहार} - \frac{\text{गच्छ} - 1}{2}}$	चय = $\frac{\text{स ∂१२ । ४}}{\text{7 । ओ । २० । 2૨।४ । (१६} - \frac{\text{2૨।४} - 1}{2})}$
प्रथम निषेक = मध्यमधन + ($\frac{\text{गच्छ} - 1}{2}$ × चय) अथवा दो गुणहानि × चय	प्रथम निषेक = $\frac{\text{स ∂१२ । ४}}{\text{7 । ओ । २० ।2૨।४ । (१६} - \frac{\text{2૨।४} - 1}{2})}$ × १६

यह प्रथम निषेक का द्रव्य शीर्ष में दिये द्रव्य से असंख्यात गुणा है । क्योंकि गुणश्रेणी में असंख्यातवां भागमात्र अपकृष्ट द्रव्य है तथा अंतर स्थिति में संख्यातवां भाग द्रव्य दिया जाता है ।

इसके ऊपर चयहीन क्रम से अंतरस्थिति के अंतिम निषेक तक द्रव्य दिया जाता है ।

द्वितीय स्थिति में द्रव्य

द्वितीय स्थिति में भी द्रव्य पूर्वोक्त अनुसार मध्यमधन आदि द्वारा दिया जाता है । क्योंकि यहाँ शेष द्वितीय स्थिति अंतर्मुहूर्त प्रमाण ही है ।

यहाँ गच्छ का प्रमाण (शेष द्वितीय स्थिति – 1 आवली) है क्योंकि अंतिम आवली अतिस्थापनावली होने से वहाँ किसी निषेक का द्रव्य नहीं दिया जाता ।

द्वितीय स्थिति के प्रथम निषेक में दिया हुआ द्रव्य; अंतर स्थिति के अंतिम निषेक में दिये द्रव्य से संख्यात गुणाहीन है ।

इसके ऊपर चयहीन क्रम से द्रव्य दिया जाता है ।

अंतरपढमठिदित्ति य, असंखगुणिदक्कमेण दिस्सदि हु । हीणकमेण असंखेज्जेण गुणं तो विहीणकमं ॥588॥

- अन्वयार्थ: (अंतरपढमठिदित्ति य) अंतर की प्रथम स्थिति तक द्रव्य (असंखगुणिदक्कमेण) क्रम से असंख्यातगुणित (दिस्सदि हु) दिखता है।
- उसके अनन्तर अंतर की अंतिम स्थिति तक (हीणकमेण) हीनक्रम से, उसके ऊपर द्वितीय स्थिति के प्रथम निषेक में (असंखेज्जेण गुणं) असंख्यात गुणित, (तो) उसके ऊपर (विहीणकमं) हीनक्रम से दिखता है ॥588॥

दृश्यमान द्रव्य का क्रम

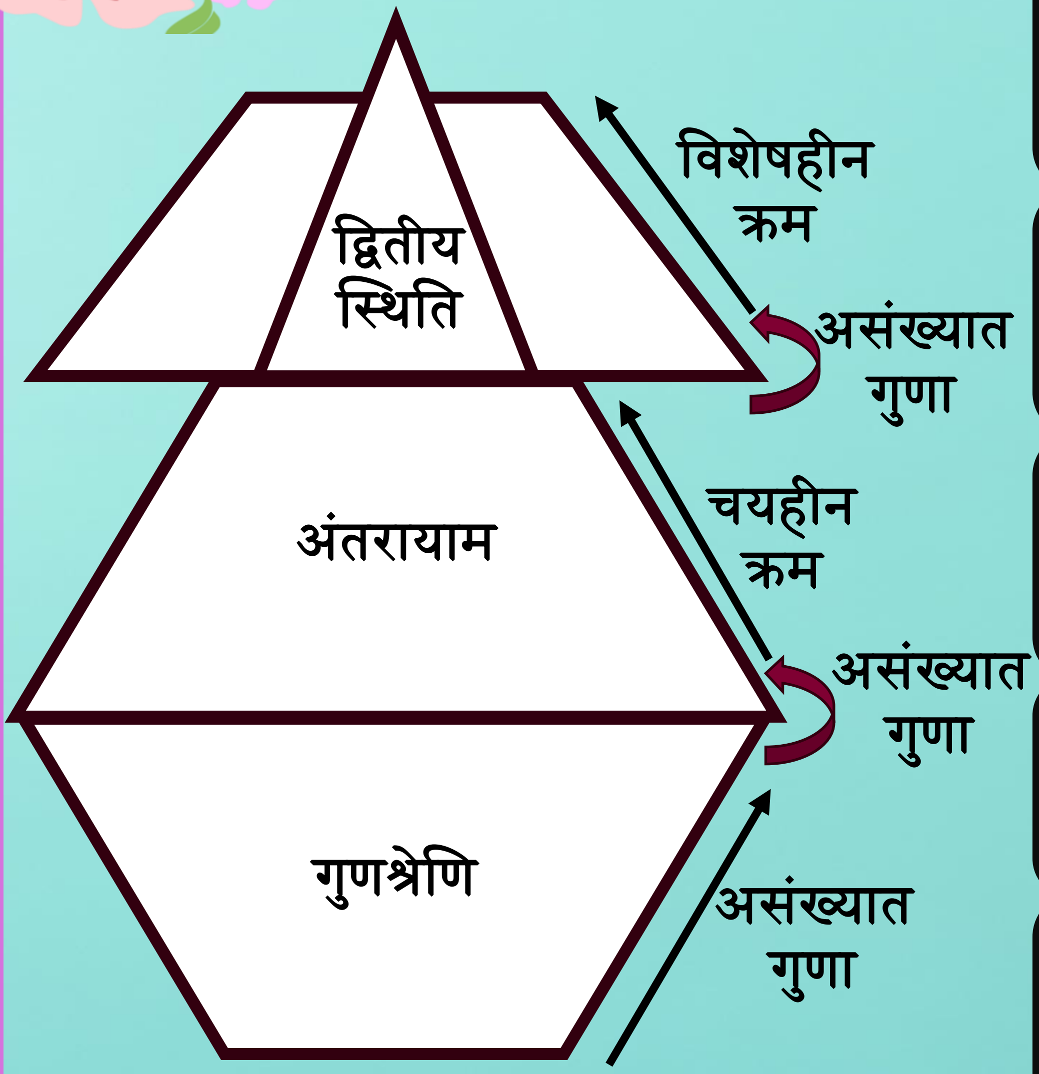

गुणश्रेणि के प्रथम निषेक से अंतर स्थिति के प्रथम निषेक तक असंख्यात गुणा क्रम दिखाई देता है ।

अंतर स्थिति के द्वितीय निषेक से अंतिम निषेक तक चयहीन क्रम दिखाई देता है ।

यहाँ तक पूर्व में द्रव्य नहीं था । अत: जो दीयमान क्रम है, वही दृश्यमान भी होता है ।

अंतरायाम के अंतिम निषेक से द्वितीय स्थिति के प्रथम निषेक में असंख्यात गुणा द्रव्य है ।

उसके ऊपर अंतिम निषेक तक चयहीन क्रम है ।

यह क्रम प्रथम स्थितिकांडक पूर्व होने तक जानना । परंतु प्रत्येक समय अपकृष्ट द्रव्य असंख्यात गुणा होता है ।

कंडयगुणचरिमठिदी, सविसेसा चरिमफालिया तस्स ।
संखेज्जभागमंतरठिदिम्हि सव्वे तु बहुभागं ॥589॥

- अन्वयार्थ: (कंडयगुणचरिमठिदी) कांडकायाम से चरम स्थिति को गुणा करके उसमें (सविसेसा) विशेष (चय) द्रव्य मिलाने पर (चरमफालिया) अंतिम फालि का द्रव्य आता है।
- (तस्स) उसका (संखेज्जभागं) संख्यातवाँ भाग (अंतरठिदिम्हि) अंतरस्थिति में देता है।
- (तु) और (बहुभागं) बहुभाग (सव्वे) सर्वस्थिति में देता है ॥589॥

प्रथम कांडक की अंतिम फाली का द्रव्य

- द्वितीय स्थिति का अंतिम निषेक = द्वितीय स्थिति का प्रथम निषेक – { (द्वितीय स्थिति-1) × चय}
- $\frac{\text{स}\partial\text{१२}}{7\,|\,2\mathcal{Q}\,|\,\text{८०}}$ (यह मध्य निषेक है । अंतिम निषेक इससे कुछ कम है। कुछ कम को गौण किया ।)
- अंतिम फाली का द्रव्य = अंतिम निषेक × कांडक का आयाम
- $$\frac{\text{स}\partial\text{१२}}{7\,|\,2\mathcal{Q}\,|\,\text{८०}} \times 2\mathcal{Q}\,|\,\text{४}\,|\,\text{४} = \frac{\text{स}\partial\text{१२}\,|\,\text{४}}{7\,|\,20}$$
- इसमें चय का द्रव्य देना शेष है । उसे गौण किया ।
- इस अंतिम फाली के द्रव्य में अपकृष्ट द्रव्य का कुछ द्रव्य मिलता है। वह थोड़ा जानकर गौण किया ।
- इस द्रव्य में से $\frac{\text{प}}{\partial}$ भाग द्रव्य गुणश्रेणी आयाम में पूर्वोक्त क्रम से देवें ।
- शेष बहुभाग द्रव्य $\frac{\text{स}\partial\text{१२}\,|\,\text{४}}{7\,|\,20\,|\,\frac{\text{प}}{\partial}} \times \left(\frac{\text{प}}{\partial} - 1\right) = \frac{\text{स}\partial\text{१२}\,|\,\text{४}}{7\,|\,20}$
- इसे सर्व-स्थिति में देना है । इसका विभाग आगे कहते हैं ।

शेष बहुभाग का विभाग

$\frac{\text{फाली का आयाम}}{\text{अंतरायाम}}$	$\frac{22\|४\|४}{22\|४} = ४$
$\frac{\text{शेष बहुभाग}}{\text{उपर्युक्त संख्यात}}$ = एक खंड	$\frac{\text{स}\partial १२\|४}{7\|20\|४} = \frac{\text{स}\partial १२}{7\|20}$
बहुभाग द्रव्य का एक खंड	$\frac{\text{स}\partial १२}{7\|20}$ यह एक खंड अंतरायाम में देता है
बहुभाग द्रव्य के शेष खंड	$\frac{\text{स}\partial १२\|३}{7\|20}$ यह अंतरायाम और द्वितीय स्थिति में देता है।
$\frac{\text{कांडक के नीचे शेष स्थिति}}{\text{अंतरायाम}}$	$\frac{22\|४\|४\|४}{22\|४} = १६$
इसे 1 अधिक करना	१६ + १ = 17
$\frac{\text{बहुभाग द्रव्य के शेष खंड}}{17}$	$\frac{\text{स}\partial १२\|३}{7\|20\|17}$ (यह एक भाग अंतरायाम में देना है)

अंतरायाम में देय द्रव्य

पूर्वोक्त एक खंड द्रव्य + शेष खंडों का एक भाग द्रव्य

$$\frac{\text{स}\partial\text{१२}}{7 | 20} + \frac{\text{स}\partial\text{१२} | \text{३}}{7 | 20 | 17}$$

$$\frac{\text{स}\partial\text{१२} | 17}{7 | 20 | 17} + \frac{\text{स}\partial\text{१२} | \text{३}}{7 | 20 | 17}$$

$$\frac{\text{स}\partial\text{१२} | 20}{7 | 20 | 17}$$

द्वितीय स्थिति में देय द्रव्य

बहुभाग द्रव्य के शेष खंड – अंतरायाम का द्रव्य

$$\frac{\text{स}\partial\text{१२} | \text{३}}{7 | 20} - \frac{\text{स}\partial\text{१२} | \text{३}}{7 | 20 | 17}$$

$$\frac{\text{स}\partial\text{१२} | \text{३} | 17}{7 | 20 | 17} - \frac{\text{स}\partial\text{१२} | \text{३}}{7 | 20 | 17}$$

$$\frac{\text{स}\partial\text{१२} | \text{३} | \text{१६}}{7 | 20 | 17}$$

अंतिम और प्रथम निषेक की तुलना

- कुल द्रव्य को गच्छ का भाग देने पर मध्यम धन आता है ।
- इसमें कुछ अधिक करने पर प्रथम निषेक का एवं कुछ कम करने पर अंतिम निषेक का प्रमाण आता है ।
- अत: द्वितीय स्थिति के प्रथम निषेक और अंतरायाम के अंतिम निषेक का द्रव्य –

द्वितीय स्थिति के प्रथम निषेक द्रव्य	अंतर स्थिति के अंतिम निषेक का द्रव्य
$\frac{\text{स ∂१२ \| ३ \| १६}}{\text{7 \| 20 \| 17 \| 22 \|४ \|४ \|४}} = \frac{\text{स ∂१२ \| ३}}{\text{7 \| 20 \| 17 \| 22 \|४}}$	$\frac{\text{स ∂१२ \| 20}}{\text{7 \| 20 \| 17 \| 22 \|४}}$

संख्यात गुणा

अत: अंतर स्थिति के अंतिम निषेक से द्वितीय स्थिति के प्रथम निषेक में संख्यात गुणा हीन द्रव्य दिया जाता है ।

प्रथम कांडक की अंतिम फाली के समय दृश्यमान द्रव्य

प्रथम स्थितिकांडक की द्विचरम फाली तक अंतर स्थिति का एक गोपुच्छ एवं द्वितीय स्थिति का भिन्न गोपुच्छ होता है । क्योंकि अंतर स्थिति में निक्षिप्त होने वाला अपकृष्ट द्रव्य समस्त द्रव्य का असंख्यातवां भाग ही है।

परंतु अंतिम फाली के पतन होने पर अंतर स्थिति एवं द्वितीय स्थिति का एक गोपुच्छ हो जाता है । क्योंकि अंतिम फाली का संख्यातवां भाग प्रमाण द्रव्य अंतर स्थिति में निक्षिप्त होता है ।

अंतिम फाली का संख्यात बहुभाग द्रव्य द्वितीय स्थिति में जाता है । द्वितीय स्थिति के प्रत्येक निषेक से अंतर स्थिति के प्रत्येक निषेक में संख्यात गुणा द्रव्य निक्षिप्त होता है । अन्यथा दोनों स्थितियों का एक गोपुच्छ नहीं हो सकता है ।

इसलिये यहाँ कहा है कि अंतिम अंतर स्थिति के निषेक से द्वितीय स्थिति के प्रथम निषेक में संख्यात गुणाहीन द्रव्य देता है ।

फाली द्रव्य, अपकृष्ट द्रव्य

कांडक हेतु जो प्रतिसमय कांडक-आयाम से द्रव्य लिया जाता है, उसे फाली द्रव्य कहते हैं । गुणश्रेणी करने के लिये सर्व स्थिति के द्रव्य का अपकर्षण करके ग्रहण किया जाता है, उसे अपकृष्ट द्रव्य कहते हैं ।

कांडक के प्रथम समय से द्विचरम समय तक अपकृष्ट द्रव्य अधिक है, फाली द्रव्य कम है । इसलिये वहाँ अपकृष्ट द्रव्य का विभाग कहा था । फाली द्रव्य को उसी में ग्रहण कर लिया जाता है ।

परंतु कांडक के अंतिम समय अपकृष्ट द्रव्य से फाली द्रव्य अधिक है । इसलिए यहाँ फाली द्रव्य का विभाग कहा जाता है । अपकृष्ट द्रव्य इसी में मिलाकर ग्रहण कर लिया है ।

अंतरपढमठिदि त्ति य, असंखगुणिदक्कमेण दिज्जदि हु । हीणं तु मोहविदियट्ठिदिखंडयदो दुघादो त्ति ॥590॥

- अन्वयार्थ: (मोहविदियट्ठिदिखंडयदो दुघादो त्ति) मोहनीय के द्वितीय स्थितिकांडक से द्विचरम कांडकघात तक (अंतरपढमठिदि त्ति य) अंतरायाम की प्रथम स्थिति तक (असंखगुणिदक्कमेण) असंख्यातगुणित क्रम से (दिज्जदि हु) द्रव्य दिया जाता है ॥590॥

द्वितीयादि कांडकों में दीयमान द्रव्य

मोहनीय के द्वितीय स्थितिकांडक से द्विचरमकांडक तक अपकृष्ट द्रव्य को गुणश्रेणी एवं उपरितन स्थिति में देता है । अंतर-स्थिति एवं द्वितीय स्थिति का गोपुच्छ; प्रथम कांडक की अंतिम फाली के पतन होने पर एक हो गया है । इसलिए अब भिन्न प्रकार से द्रव्य नहीं दिया जाता है ।

गुणश्रेणी द्रव्य = $\frac{\text{अपकृष्ट द्रव्य}}{\text{पल्य/असंख्यात}}$ इसे उदयावली के प्रथम समय से शीर्ष तक असंख्यात गुणा क्रम से दिया जाता है ।

शेष असंख्यात बहुभाग द्रव्य को शीर्ष के अनंतर निषेक से अतिस्थापनावली के नीचे तक दिया जाता है ।

www.JainKosh.org

सूक्ष्म लोभ की गुणश्रेणी

$$\text{मध्यमधन} = \frac{\text{बहुभाग द्रव्य}}{\text{गच्छ}}$$

$$\text{प्रथम निषेक} = \text{मध्यमधन} + \frac{(\text{गच्छ} - 1)}{2} \times \text{चय}$$

यह प्रथम निषेक का द्रव्य शीर्ष में दिये द्रव्य से असंख्यात गुणा होता है । इसलिए अंतर स्थिति के प्रथम निषेक तक असंख्यात गुणा द्रव्य देता है – ऐसा कहा है ।

प्रथम निषेक के ऊपर द्वितीयादि निषेकों में चयहीन क्रम से द्रव्य देता है ।

यहाँ प्रत्येक कांडक में प्रथम फाली से द्विचरम फाली तक अपकृष्ट द्रव्य सर्व द्रव्य का असंख्यातवां भाग है । अंतिम फाली में फाली का द्रव्य सर्वद्रव्य का संख्यातवां भाग है ।

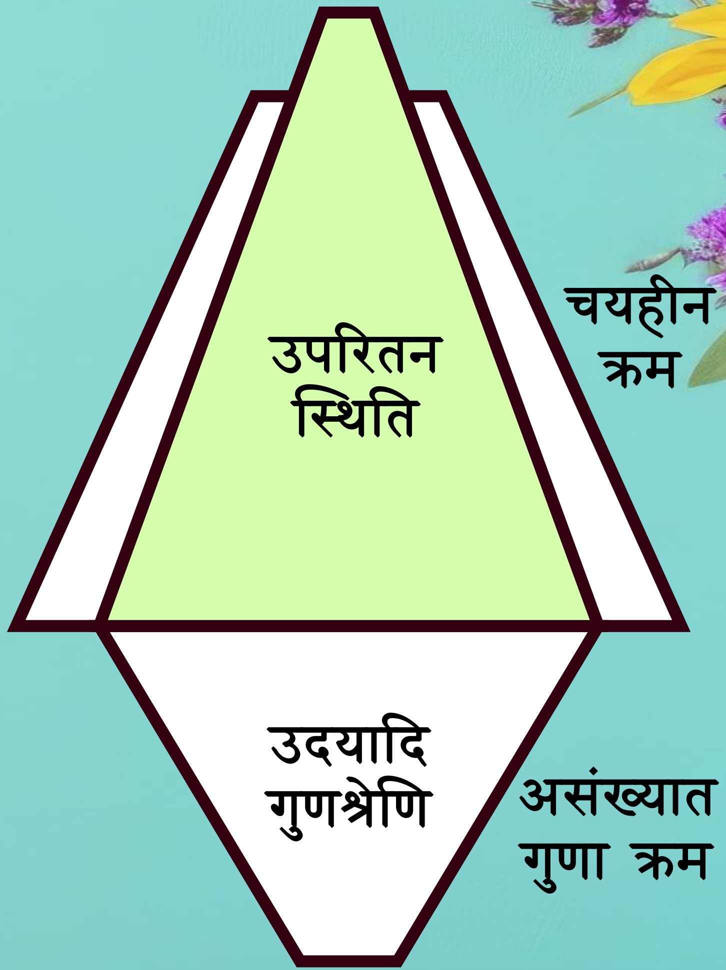

अंतरपढमठिदित्ति य, असंखगुणिदक्कमेण दिस्सदि हु ।
हीणं तु मोहविदियट्ठिदिखंडयदो दुघादो त्ति ॥591॥

- अन्वयार्थ: (मोहविदियट्ठिदिखंडयदो दुघादो त्ति) मोहनीय के द्वितीय स्थितिकांडक घात से द्विचरम कांडकघात तक द्रव्य (अंतरपढमठिदि त्ति य) अंतरायाम की प्रथम स्थिति तक (असंखगुणिदक्कमेण) क्रम से असंख्यातगुणित (दिस्सदि हु) दिखता है और उसके ऊपर (हीणं तु) क्रम से हीन-हीन दिखता है ॥591॥

द्वितीयादि कांडकों में दृश्यमान द्रव्य

उदय समय में द्रव्य सबसे अल्प है ।

उससे अनंतर निषेक में द्रव्य असंख्यात गुणा है ।

ऐसे तृतीयादि निषेक से अंतर के प्रथम निषेक तक असंख्यात गुणा द्रव्य है ।

उसके ऊपर सर्वत्र चयहीन क्रम से द्रव्य है ।

पढमगुणसेढिसीसं, पुव्विल्लादो असंखसंगुणियं ।
उवरिमसमये दिस्सं, विसेस-अहियं हवे सीसे ॥592॥

- अन्वयार्थ: (पढमगुणसेढिसीसं) द्वितीय स्थितिकांडक के प्रथम समय में गुणश्रेणीशीर्ष (पुव्विलादो) पूर्वसमय के गुणश्रेणिशीर्ष से (असंखसंगुणियं) असंख्यातगुणित है,
- परन्तु (उवरिमसमये) द्वितीयादि समयों में (सीसे दिस्सं) गुणश्रेणी शीर्ष में दृश्यद्रव्य पूर्व गुणश्रेणीशीर्ष से (विसेस-अहियं) विशेष अधिक (हवे) है ॥592॥

www.JainKosh.org

शीर्ष का अल्प-बहुत्व

उदयादि अवस्थित गुणश्रेणी होने से प्रत्येक समय में उपरितन एक-एक निषेक गुणश्रेणी में मिलता जाता है । इस प्रकार शीर्ष प्रत्येक समय नया-नया होता है ।

द्वितीय स्थितिकांडक के प्रथम समय में गुणश्रेणीशीर्ष पूर्व के शीर्ष से असंख्यात गुणित है ।

आगे के समयों में शीर्ष विशेष अधिक ही है, असंख्यात गुणित नहीं ।

इसका कारण गाथा 135, 136 में कहे अनुसार जानना ।

सुहुमद्धादो अहिया, गुणसेढी अंतरं तु तत्तो दु ।
पढमे खंडं पढमे, संतो मोहस्स संखगुणिदकमा ॥593॥

- अन्वयार्थ: (सुहुमद्धादो) सूक्ष्मसांपरायकाल से (गुणसेढी) गुणश्रेणि (अहिया) अधिक है।
- (तत्तो) उससे (अंतरं) अंतरायाम, (मोहस्स) मोहनीय का (पढमे खंडं) प्रथम स्थितिकांडकायाम, (पढमे संतो) प्रथम समय का मोहनीय का स्थिति-सत्त्व (संखगुणिदकमा) क्रम से संख्यातगुणे हैं ॥593॥

सूक्ष्म सांपराय में अल्प-बहुत्व

पद	अल्प-बहुत्व
सूक्ष्म-सांपराय काल	स्तोक
गुणश्रेणी आयाम	विशेष अधिक (संख्यात भाग अधिक)
अंतरायाम	संख्यात गुणा
प्रथम स्थितिकांडक का आयाम	संख्यात गुणा
मोहनीय का प्रथम स्थिति-सत्त्व	संख्यात गुणा

यह सारे काल अंतर्मुहूर्त प्रमाण है ।

www.JainKosh.org

एदेणप्पाबहुगविधाणेण विदीयखंडयादीसु ।
गुणसेढिमुज्झियेया, गोपुच्छा होदि सुहुमम्हि ॥594॥

- अन्वयार्थ: (एदेणप्पाबहुगविधाणेण) इस अल्प-बहुत्व विधान से (सुहुमम्हि) सूक्ष्मसांपराय गुणस्थान में (विदियखंडयादिसु) द्वितीय स्थितिकाण्डकादि काल में (गुणसेढिमुज्झिय) गुणश्रेणि छोड़कर उपरिम सर्वस्थिति का (एया गोपुच्छा) एक गोपुच्छ (होदि) होता है ॥594॥

www.JainKosh.org

एक गोपुच्छ होने का हेतु

इस अल्प-बहुत्व के द्वारा यह जाना जाता है कि अंतरायाम और द्वितीय स्थिति का गोपुच्छ; प्रथम कांडक की अंतिम फाली के पतन के समय एक हो जाता है ।

चूंकि अंतरायाम से कांडक का आयाम संख्यात गुणा है । अतः कांडक के निषेक द्रव्य द्वारा अंतरायाम को एक गोपुच्छ करने हेतु द्रव्य प्राप्त हो जाता है ।

यदि अंतरायाम से कांडक का आयाम हीन होता, तो अंतरायाम को एक गोपुच्छ करने हेतु द्रव्य नहीं मिलता । तब दोनों का एक गोपुच्छ नहीं हो पाता ।

इससे ज्ञात होता है कि दोनों का एक गोपुच्छ अंतिम फाली के पतन के समय ही होगा ।

www.JainKosh.org

सुहुमाणं किट्टीणं, हेट्ठा अणुदिण्णगा हु थोवाओ ।
उवरिं तु विसेसहिया, मज्झे उदया असंखगुणा ॥595॥

- अन्वयार्थ: (सुहुमाणं किट्टीणं) सूक्ष्मकृष्टियों की (हेट्ठा अणुदिण्णगा हु) अधस्तन अनुदीर्ण कृष्टियाँ (थोवाओ) थोड़ी हैं।
- (उवरिं तु) उपरिम अनुदीर्ण कृष्टियाँ (विसेसहिया) विशेष अधिक हैं।
- (मज्झे) मध्य की (उदया) उदयरूप सूक्ष्म-कृष्टियाँ (असंखगुणा) असंख्यातगुणित हैं ॥595॥

www.JainKosh.org

उदय-अनुदयगत कृष्टियाँ

प्रथम समयवर्ती सूक्ष्मसांपराय क्षपक को सूक्ष्मकृष्टियों में से असंख्यात बहुभाग कृष्टियाँ उदय में आती हैं। ये उदयरूप कृष्टियाँ उपरिम और अधस्तन असंख्यातवें भाग को छोड़कर मध्य की बहुभाग प्रमाण हैं।

अनुदीर्ण कृष्टियाँ असंख्यातवे भाग प्रमाण हैं ।

उनमें से अधस्तन अनुदीर्ण कृष्टियाँ अल्प हैं। ये कृष्टियाँ अपने स्व-स्वरूप को छोड़कर अनंतगुणा होकर मध्यम कृष्टिरूप से उदय में आती हैं ।

उससे उपरिम अनुदीर्ण सूक्ष्म-कृष्टियाँ विशेष अधिक हैं। ये कृष्टियाँ स्वरूप को छोड़कर अनंत गुणाहीन होकर मध्यम कृष्टि रूप से उदय में आती हैं ।

सर्व सूक्ष्मकृष्टियों का प्रमाण सूक्ष्मकृष्टिकरण के प्रथम समय में की गई सूक्ष्मकृष्टियों के प्रमाण में कुछ अधिक करने पर आता है। $\frac{४}{ख}+$

www.JainKosh.org

सर्व कृष्टियाँ = $\frac{४}{ख}+$, एकभाग = $\frac{४}{ख \,।\, \frac{प}{\partial}}+$

इसे छोड़कर शेष बहुभाग कृष्टियाँ अपने स्वरूप से ही उदय को प्राप्त होती है । $\frac{४}{ख \,।\, \frac{प}{\partial}} \times (\frac{प}{\partial} - 1)$

- $\frac{४}{ख}+$
  - अनुदय प्राप्त एकभाग: $\frac{४}{ख \,।\, \frac{प}{\partial}}+$
    - $\frac{४}{ख \,।\, \frac{प}{\partial}\frac{प}{\partial}}$
    - $\frac{४}{ख \,।\, \frac{प}{\partial}\frac{प}{\partial}} \times (\frac{प}{\partial} - 1)$
      - उपरिम अनुदय कृष्टि: $\frac{४}{ख \,।\, \frac{प}{\partial}\frac{प}{\partial}\times २} \times (\frac{प}{\partial} - 1)$
      - अधस्तन अनुदय कृष्टि: $\frac{४}{ख \,।\, \frac{प}{\partial}\frac{प}{\partial}\times २} \times (\frac{प}{\partial} - 1)$
  - बहुभाग स्वरूप से ही उदित: $\frac{४}{ख \,।\, \frac{प}{\partial}} \times (\frac{प}{\partial} - 1)$

उदय-अनुदय कृष्टियाँ

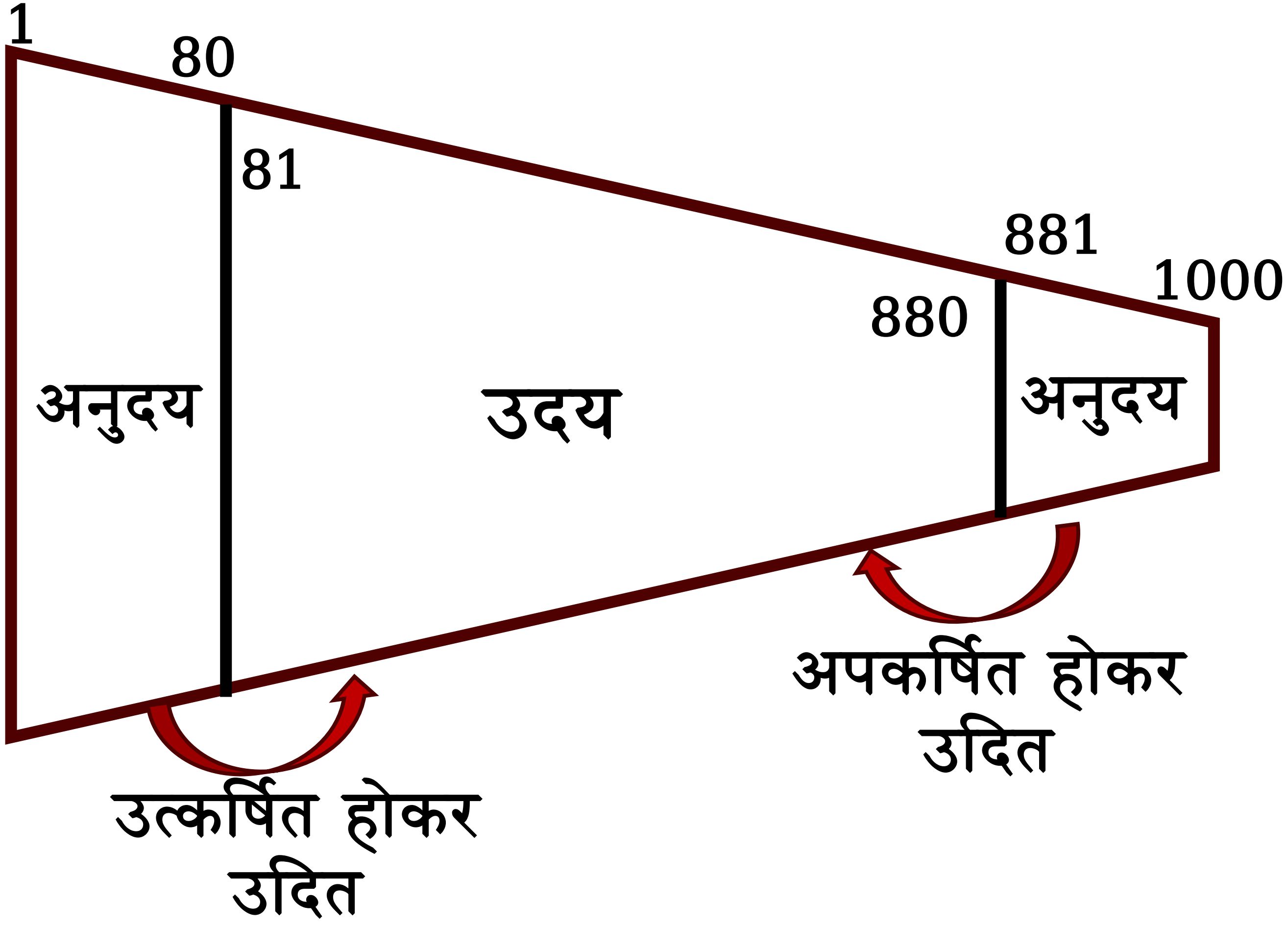

उपरितन अनुदय कृष्टियाँ =

बहुभाग का अर्ध भाग + एक भाग

= (४ + २ / खप५ / ∂) + (४ + १ / ख (प / ∂) ५) = (४ + ३ / खप५ / ∂)

अधस्तन अनुदय कृष्टियाँ = (४ + २ / खप५ / ∂)

यहाँ लघु संदृष्टि के लिये (पल्य / असंख्यात) की संदृष्टि ५ करी है ।

www.JainKosh

उदय-अनुदय कृष्टियों का अल्प-बहुत्व

कृष्टि	अल्प-बहुत्व	संदृष्टि
अधस्तन अनुदय कृष्टि	स्तोक	४ + २ ख प ५ ∂
उपरितन अनुदय कृष्टि	विशेष अधिक	४ + ३ ख प ५ ∂
उदय कृष्टि	असंख्यात गुणा	$\frac{४}{ख \mid \frac{प}{\partial}} \times (\frac{प}{\partial} - 1)$

www.JainKosh.org

सूक्ष्म-सांपराय के द्वितीय समय में अग्र उदय-अनुदय कृष्टियाँ

द्वितीय समय में प्रथम समय में उदय प्राप्त अग्र कृष्टि से लेकर एक असंख्यातवां भाग कृष्टियाँ अनुदयरूप होती हैं ।

याने जिनका प्रथम समय में उदय हो रहा था, ऐसी तीव्र शक्ति वाली कृष्टियाँ द्वितीय समय में उदित नहीं होती हैं ।

वे अनंत गुणाहीन होकर मध्यम कृष्टि रूप से उदय को प्राप्त होती हैं ।

यह युक्तिसंगत भी है क्योंकि प्रत्येक समय में अनंत गुणाहीन कृष्टियाँ उदय में आती हैं ।

अधस्तन अनुदय कृष्टियाँ

प्रथम समय में अधस्तन अनुदय कृष्टियों का एक असंख्यातवां भाग उदय को प्राप्त होता है ।

जो अधस्तन कृष्टियाँ प्रथम समय में उदय को प्राप्त नहीं थी, वे इस समय उदित होती हैं ।

प्रश्न – इस प्रकार अधिक कृष्टियों का उदय आने पर तो अनुभाग की वृद्धि हो जायेगी ?

उत्तर – नहीं, क्योंकि अधस्तन कृष्टियों का उदय हो रहा है, अग्र कृष्टियों का नहीं ।

जो अधस्तन कृष्टियाँ पहले अनुदय होने से अधिक शक्ति में परिणत होकर उदित हो रही थी, वे अब स्व-स्वरूप से ही उदय में आयेंगी ।

इससे उदय का अनुभाग हीन ही हो रहा है, अधिक नहीं ।

सुहुमे संखसहस्से, खंडे तीदेऽवसाणखंडेण ।
आगायदि गुणसेढी, आगादो संखभागे च ॥596॥

- अन्वयार्थ: (सुहुमे) सूक्ष्मसांपराय गुणस्थान में (संखसहस्से खंडे तीदे) संख्यात हजार स्थितिकांडक व्यतीत होने पर (अवसाणखंडेण) अंतिम स्थितिकांडक द्वारा (गुणसेढी आगादो) पूर्व गुणश्रेणि आयाम के अग्र से (संखभागे च) संख्यातवें भाग को (आगायदि) ग्रहण करता है ॥596॥

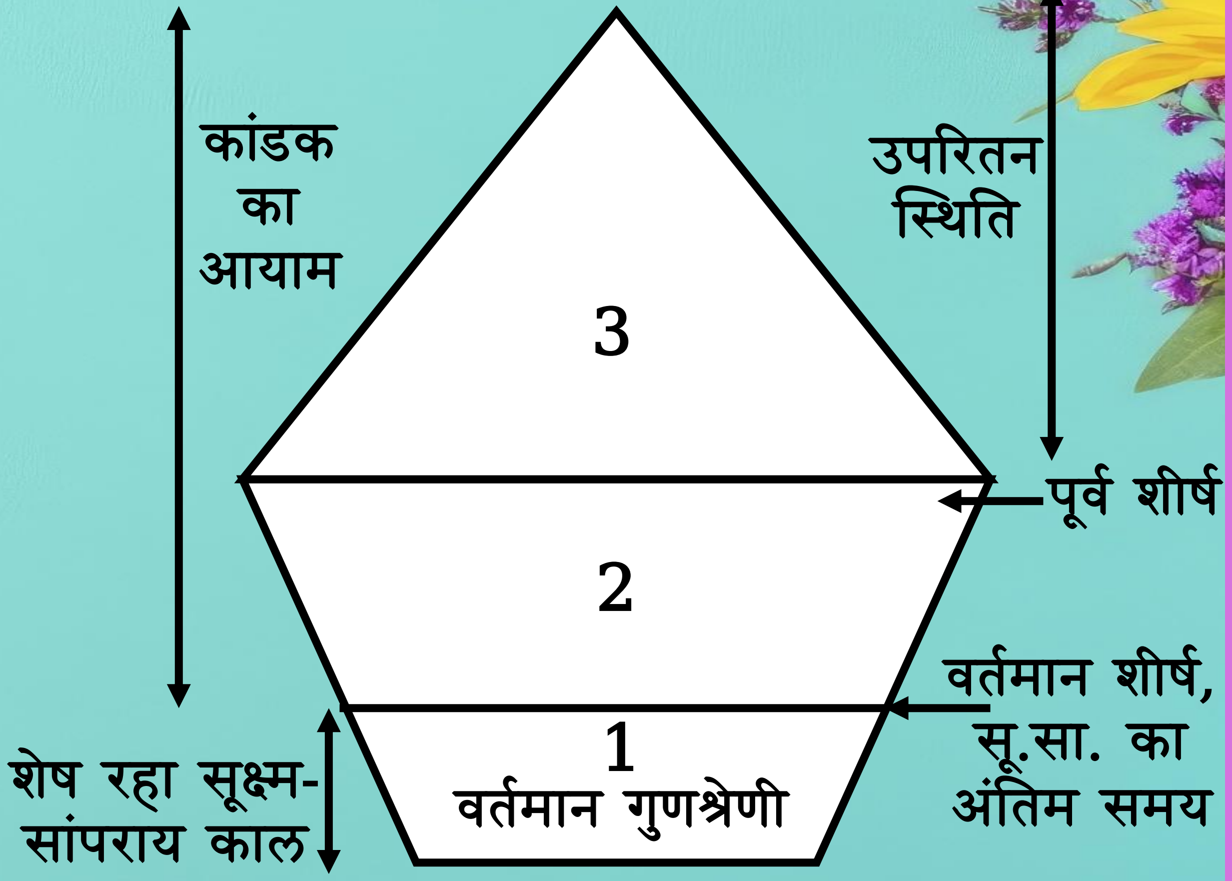

www.JainKosh.org

मोह का अंतिम कांडक घात

सूक्ष्मसांपराय के संख्यात बहुभाग काल में संख्यात हजार स्थितिकांडकों के होने पर मोहनीय के अंतिम स्थिति कांडकघात को करता है ।

यहाँ अवस्थित गुणश्रेणी के स्थान पर गलितावशेष गुणश्रेणी होती है ।

गुणश्रेणी का आयाम; शेष रहा सूक्ष्म-सांपराय का काल प्रमाण होता है ।

अंतिम स्थितिकांडक का आयाम पूर्वोक्त गुणश्रेणी आयाम के ऊपर से लेकर अंतिम निषेक तक होता है ।

पूर्व गुणश्रेणी शीर्ष कांडक-आयाम में ग्रहण हो जाता है ।

वर्तमान गुणश्रेणी शीर्ष से पूर्व शीर्ष का काल संख्यात गुणा है । पूर्व शीर्ष से उपरितन स्थिति संख्यात गुणा है ।

एत्तो सुहुमंतोत्ति य, दिज्जस्स य दिस्समाणगस्स कमो । सम्मत्तचरिमखंडे, तक्कदिकज्जेवि उत्तं व ॥597॥

- अन्वयार्थ: (एत्तो सुहुमंतोत्ति य) यहाँ से लेकर सूक्ष्मसांपराय के अन्त समय तक (दिज्जस्स य) देयद्रव्य और (दिस्समाणगस्स) दृश्यमान द्रव्य का (कमो) क्रम (सम्मत्तचरिमखंडे) सम्यक्त्व के चरम स्थितिकाण्डक में और (तक्कदिकज्जेवि) उसके कृतकृत्य अवस्था में (उत्तं व) कहे गये अनुसार जानना चाहिए ॥597॥

www.JainKosh.org

अपकृष्ट द्रव्य देने के लिए 3 स्थान हैं। उन्हें 3 पर्व कहते हैं। ये 3 पर्व हैं–

अंतिम कांडक के द्रव्य हेतु 3 पर्व

1) सांप्रतिक गुणश्रेणी

- उदय समय से लेकर शेष रखी हुई स्थिति प्रमाण जो गुणश्रेणी का आयाम है, वह प्रथम पर्व है।

2) पूर्व अवस्थित गुणश्रेणी शीर्ष

- प्रथम पर्व के अगले निषेक से लेकर पूर्व अवस्थित गुणश्रेणी के शीर्ष तक का आयाम द्वितीय पर्व है।
- इसका काल प्रथम पर्व से संख्यात गुणा है।

3) उपरितन स्थिति

- पूर्व अवस्थित गुणश्रेणी शीर्ष से ऊपर जो स्थिति है वह सारी उपरितन स्थिति है। यह तीसरा पर्व है।
- इसका काल दूसरे पर्व से संख्यात गुणा है।

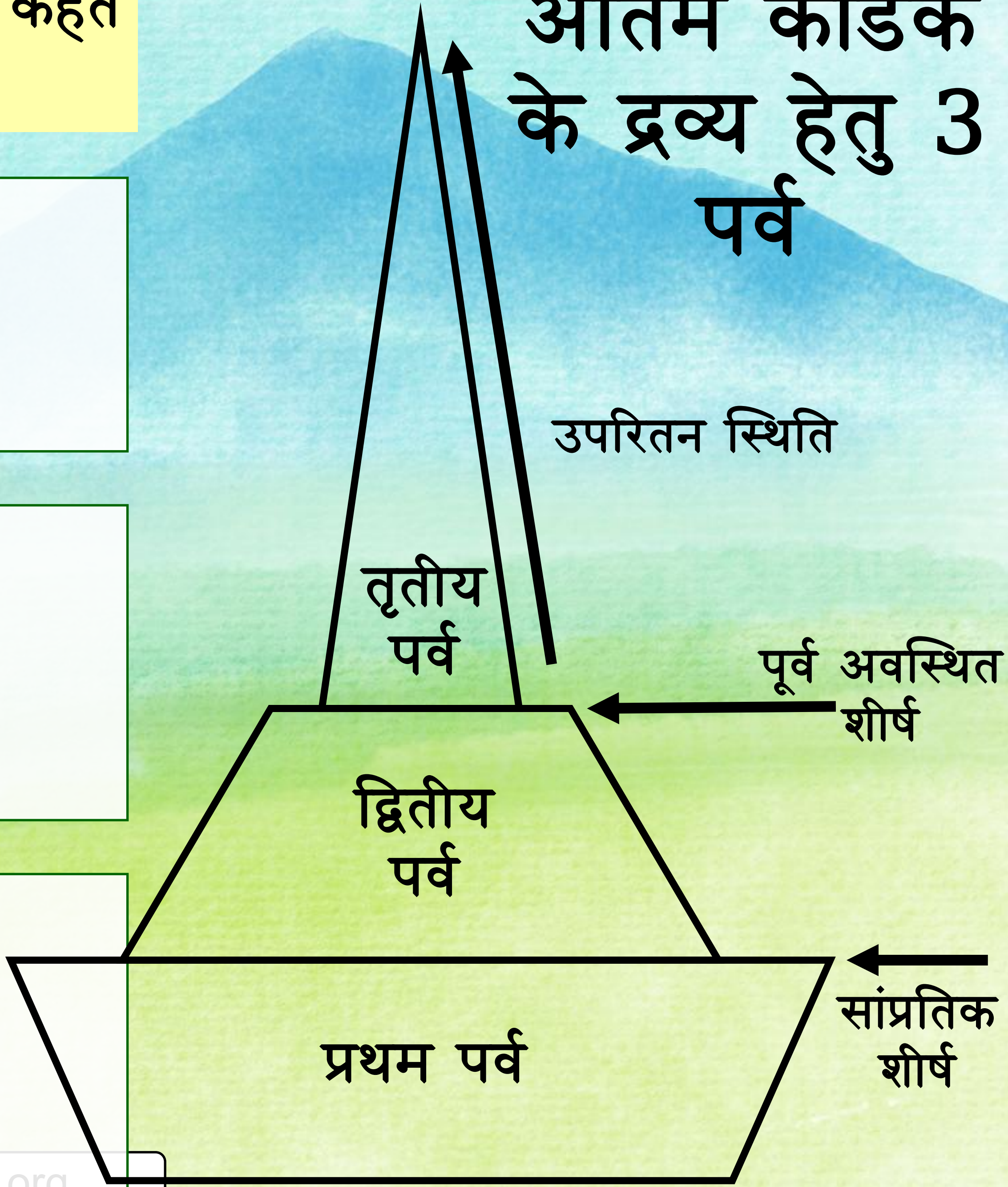

www.JainKosh.org

अपकृष्ट द्रव्य को इन तीन पर्वों में इस प्रकार दिया जाता है –

	प्रथम पर्व	द्वितीय पर्व	तृतीय पर्व
कितना द्रव्य?	अपकृष्ट द्रव्य का असंख्यात बहुभाग	अपकृष्ट द्रव्य के एक भाग का असंख्यात बहुभाग	अपकृष्ट द्रव्य का शेष रहा एक भाग
किस क्रम से?	प्रथम निषेक से अंतिम निषेक तक असंख्यात गुणित क्रम से	प्रथम निषेक से अंतिम निषेक तक चयहीन क्रम से	प्रथम निषेक से अतिस्थापनावली छोड़कर शेष स्थिति में चयहीन क्रम से
किस विधान से?	प्रक्षेप विधि से	मध्यमधन आदि सूत्रों के द्वारा	मध्यमधन आदि सूत्रों के द्वारा

ऐसा देने पर इनके दीयमान द्रव्य का अल्प-बहुत्व इस प्रकार होता है –

1) प्रथम पर्व के अंतिम निषेक से द्वितीय पर्व के प्रथम निषेक में असंख्यात गुणा हीन द्रव्य प्राप्त होता है । क्योंकि

(अ) द्वितीय पर्व में देय द्रव्य; पूर्व पर्व के देय द्रव्य से असंख्यात गुणा हीन है ।

(ब) द्वितीय पर्व का आयाम प्रथम पर्व के आयाम से संख्यात गुणा बड़ा है ।

2) द्वितीय पर्व के अंतिम निषेक से तृतीय पर्व के प्रथम निषेक में असंख्यात गुणा हीन द्रव्य प्राप्त होता है । क्योंकि

(अ) तृतीय पर्व में देय द्रव्य; पूर्व पर्व के देय द्रव्य से असंख्यात गुणा हीन है ।

(ब) तृतीय पर्व का आयाम द्वितीय पर्व के आयाम से संख्यात गुणा बड़ा है ।

www.JainKosh.org

सूक्ष्म लोभ के अंतिम कांडक की द्विचरम फाली तक तीन पर्वों में देय द्रव्य

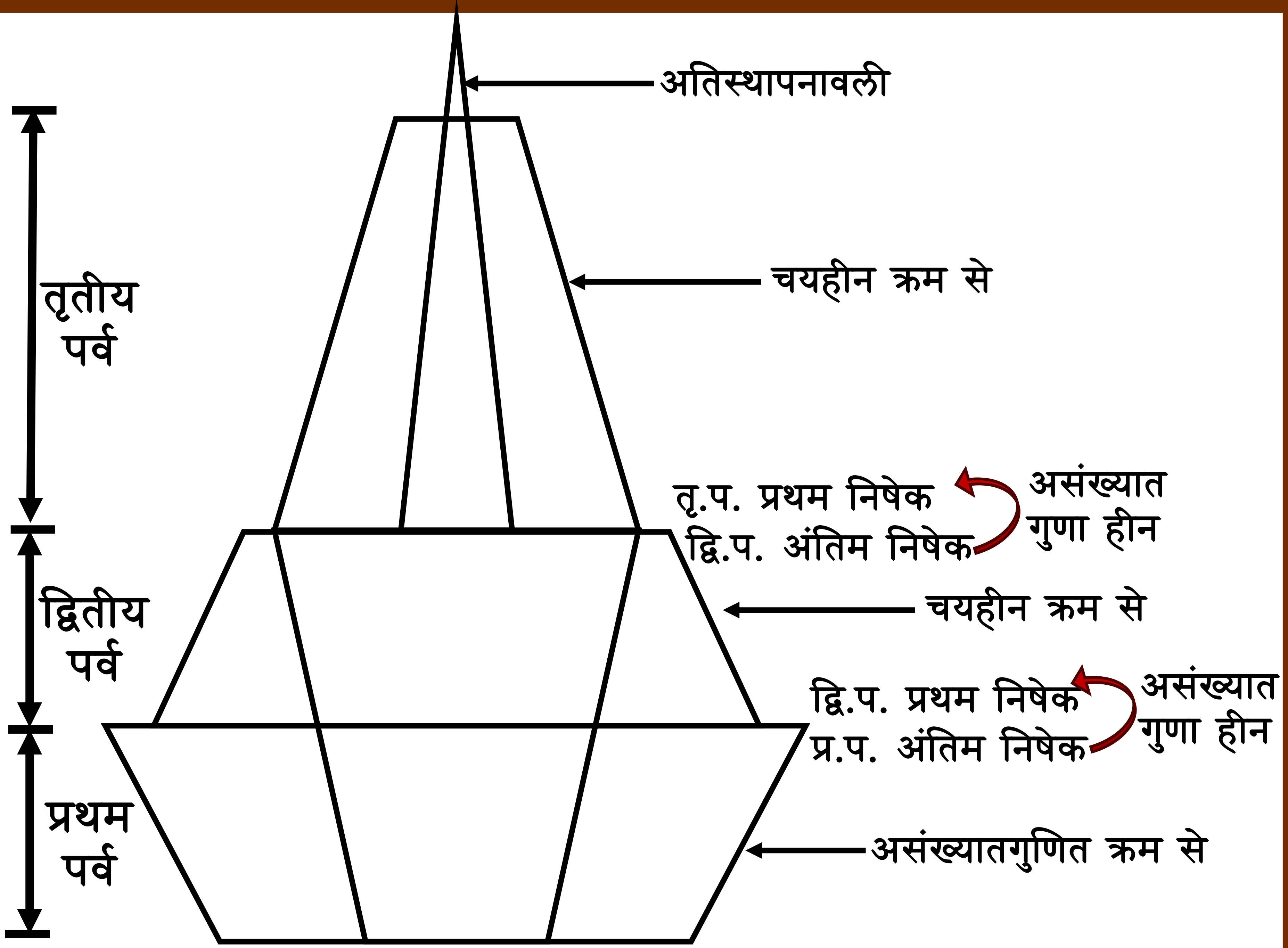

www.JainKosh.org

सूक्ष्म लोभ के अंतिम कांडक की अंतिम फाली का निक्षेप क्रम

सूक्ष्म कृष्टि के अंतिम कांडक की अंतिम फाली का द्रव्य गलितावशेष गुणश्रेणी आयाम में असंख्यात गुणित क्रम से दिया जाता है ।

उदय समय से लेकर द्विचरम निषेक तक एक पर्व कहलाता है । अंतिम निषेक द्वितीय पर्व कहलाता है ।

वहाँ द्वितीय पर्व में बहुभाग द्रव्य दिया जाता है । प्रथम पर्व में एक भाग द्रव्य दिया जाता है ।

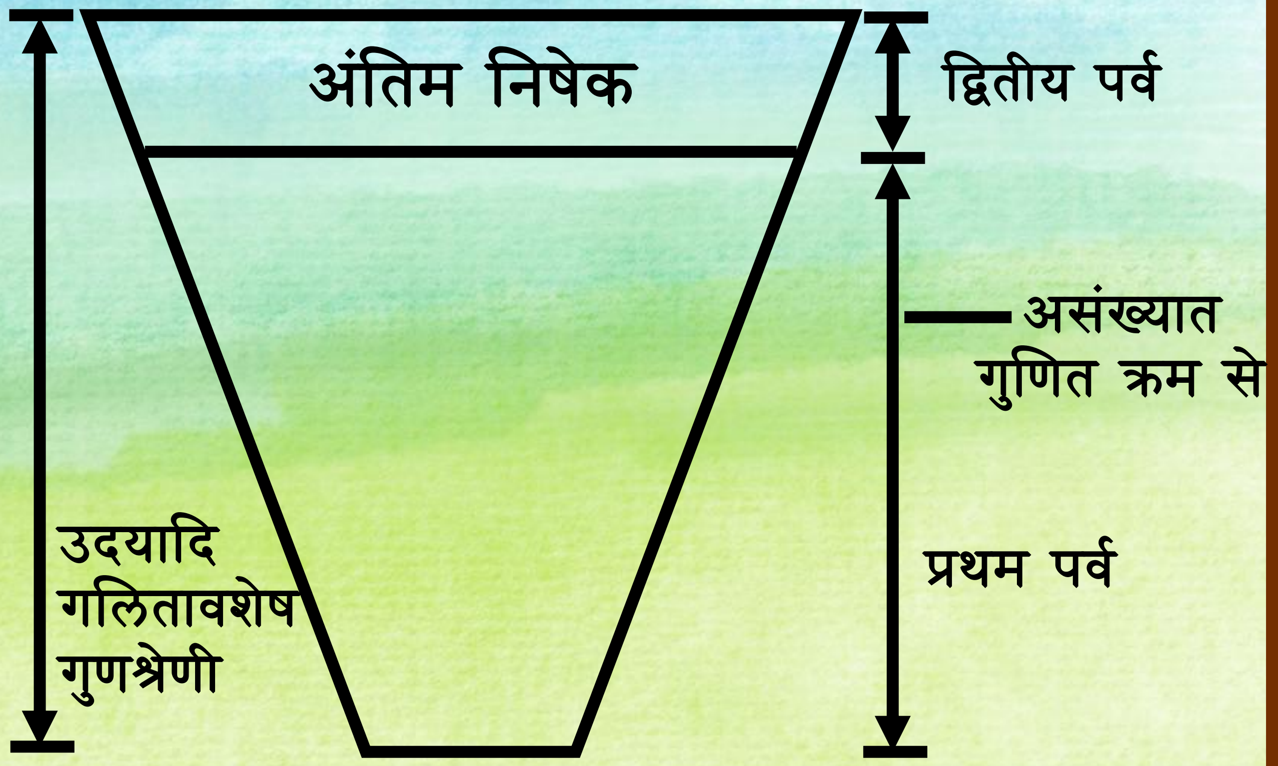

अंतिम कांडक की अंतिम फाली का द्रव्य

यहाँ शेष रहा सूक्ष्म लोभ द्रव्य = स∂१२–
७

क्योंकि अध:गलन निषेक एवं गलितावशेष आयाम के निषेकों को छोड़कर अभी भी बहुभाग द्रव्य उपरितन स्थिति में है, जिसका घात इस अंतिम फाली में किया जा रहा है ।

सूक्ष्म लोभ द्रव्य

$\frac{\text{सूक्ष्म लोभ द्रव्य}}{\text{मू}\,\partial}$	$\frac{\text{सूक्ष्म लोभ द्रव्य} \times (\text{मू}\,\partial - 1)}{\text{मू}\,\partial}$
प्रथम पर्व में देय द्रव्य	द्वितीय पर्व में देय द्रव्य

यहाँ (पल्य का प्रथम वर्गमूल × असंख्यात) भागहार है ।

यह प्रथम पर्व का देय द्रव्य; उदय निषेक में स्तोक, उससे असंख्यात गुणा द्वितीय निषेक में, ऐसे उत्तरोत्तर द्विचरम निषेक तक दिया जाता है ।

द्वितीय पर्व में देय द्रव्य एक निषेक में ही दिया जाना है । सो वह पूरा ही वहाँ निक्षिप्त किया जाता है ।

उक्किण्णे अवसाणे, खंडे मोहस्स णत्थि ठिदिघादो ।
ठिदिसत्तं मोहस्स य, सुहुमद्धासेसपरिमाणं ॥598॥

- अन्वयार्थ: (अवसाणे खंडे) अंतिम स्थितिकाण्डक का (उक्किण्णे) उत्कीर्ण होने पर (मोहस्स) मोहनीय का (ठिदिघादो) स्थितिघात (णत्थि) नहीं होता है।
- (य) और (मोहस्स) मोहनीय का (ठिदिसत्तं) स्थिति-सत्त्व (सुहुमद्धासेसपरिमाणं) सूक्ष्मसांपराय का जितना काल शेष रहा है उतना प्रमाण है ॥598॥

कृतकृत्य कृष्टि वेदक

अंतिम कांडक का घात होने पर मोह का स्थितिघात नहीं होता ।

अब सूक्ष्मसांपराय के शेष काल प्रमाण मोह का स्थिति-सत्त्व है ।

प्रत्येक समय सूक्ष्म लोभ की अनुभाग अपवर्तना होती है ।

उसके एक-एक निषेक को भोगते हुए सूक्ष्म-सांपराय का अंतिम समय प्राप्त होता है ।

कृतकृत्य कृष्टि वेदक

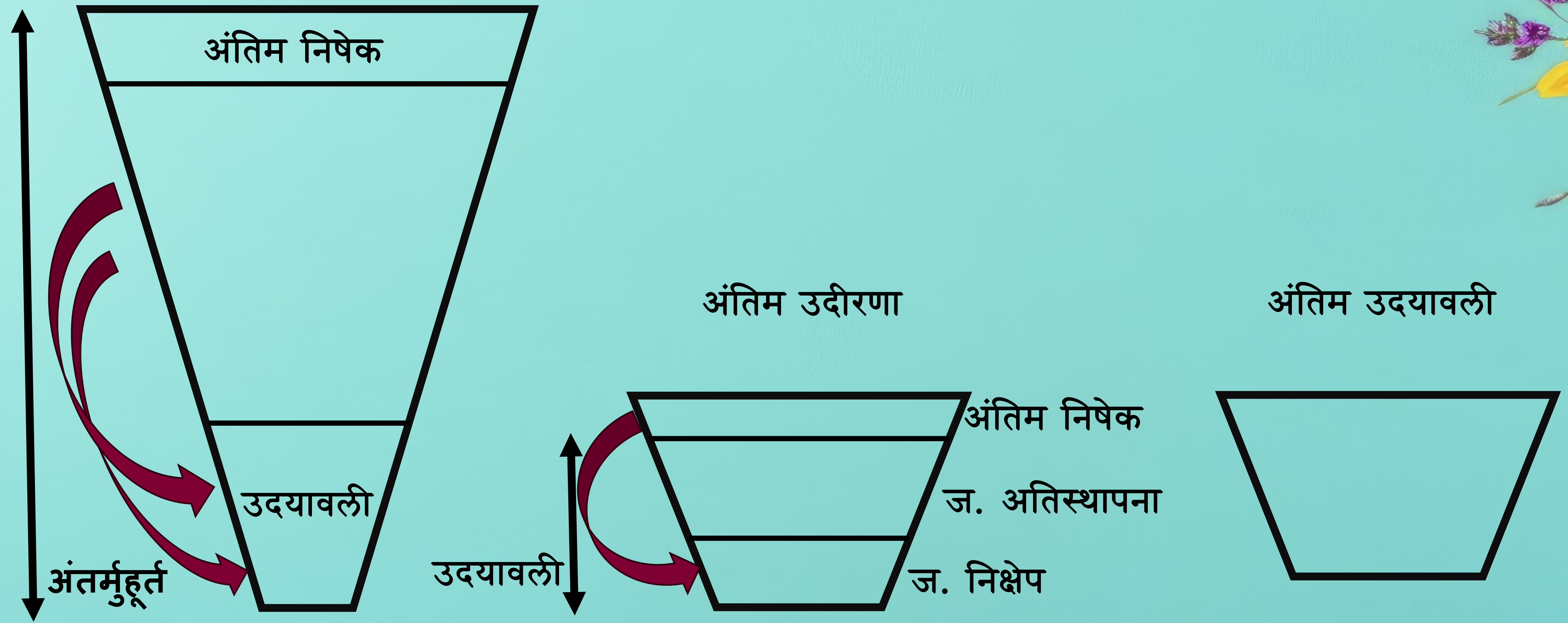

www.JainKosh.org

णामदुगे वेदणीये, अडवारमुहुत्तयं तिघादीणं ।
अंतोमुहुत्तमेत्तं, ठिदिबंधो चरिमसुहमम्हि ॥599॥
तिण्हं घादीणं ठिदिसंतो अंतोमुहुत्तमेत्तं तु ।
तिण्हमघादीणं ठिदिसंतमसंखेज्जवस्साणि ॥600॥

- अन्वयार्थ: (चरिमसुहमम्हि) सूक्ष्मसांपराय के अंतिम समय में (णामदुगे) नाम और गोत्र का (ठिदिबंधो) स्थिति-बंध (अडवारमुहुत्तयं) आठ मुहूर्त,
- (वेदणीय) वेदनीय का (वार मुहुत्तयं) बारह मुहूर्त और
- (तिघादीणं) तीन घाति कर्मों का (अंतोमुहुत्तमेत्तं) अन्तर्मुहूर्तमात्र होता है।
- सूक्ष्मसांपराय के अंतिम समय में (तिण्हं घादीणं) तीन घाति कर्मों का (ठिदिसंतो) स्थिति-सत्त्व (अंतोमुहुत्तमेतं तु) अन्तर्मुहूर्तमात्र है और
- (तिण्हं अघादीणं) तीन अघाति कर्मों का स्थिति-सत्त्व (असंखेज्जवस्साणि) असंख्यात वर्षप्रमाण है ॥599-600॥

सूक्ष्मसांपराय के अंत में स्थिति-बंध, सत्त्व

कर्म	स्थिति-बंध	स्थिति-सत्त्व
3 घाति	अंतर्मुहूर्त	अंतमुहूर्त
नाम-गोत्र	8 मुहूर्त	असंख्यात वर्ष
वेदनीय	12 मुहूर्त	असंख्यात वर्ष

यहाँ मोहनीय की उदय-व्युच्छित्ति भी हुई एवं क्षपक के मोहनीय का सत्त्व भी उदित होकर नष्ट हुआ ।

यहाँ साता वेदनीय को छोड़कर शेष 16 कर्मों की बंध-व्युच्छित्ति हुई ।

यहाँ अंत में समस्त 6 कर्मों का जघन्य स्थिति-बंध तथा नाम, गोत्र, वेदनीय का उत्कृष्ट अनुभाग-बंध होता है ।

इस प्रकार सूक्ष्मसांपराय गुणस्थान समाप्त होकर अनंतर समय में क्षीणमोही होता है ।

www.JainKosh.org

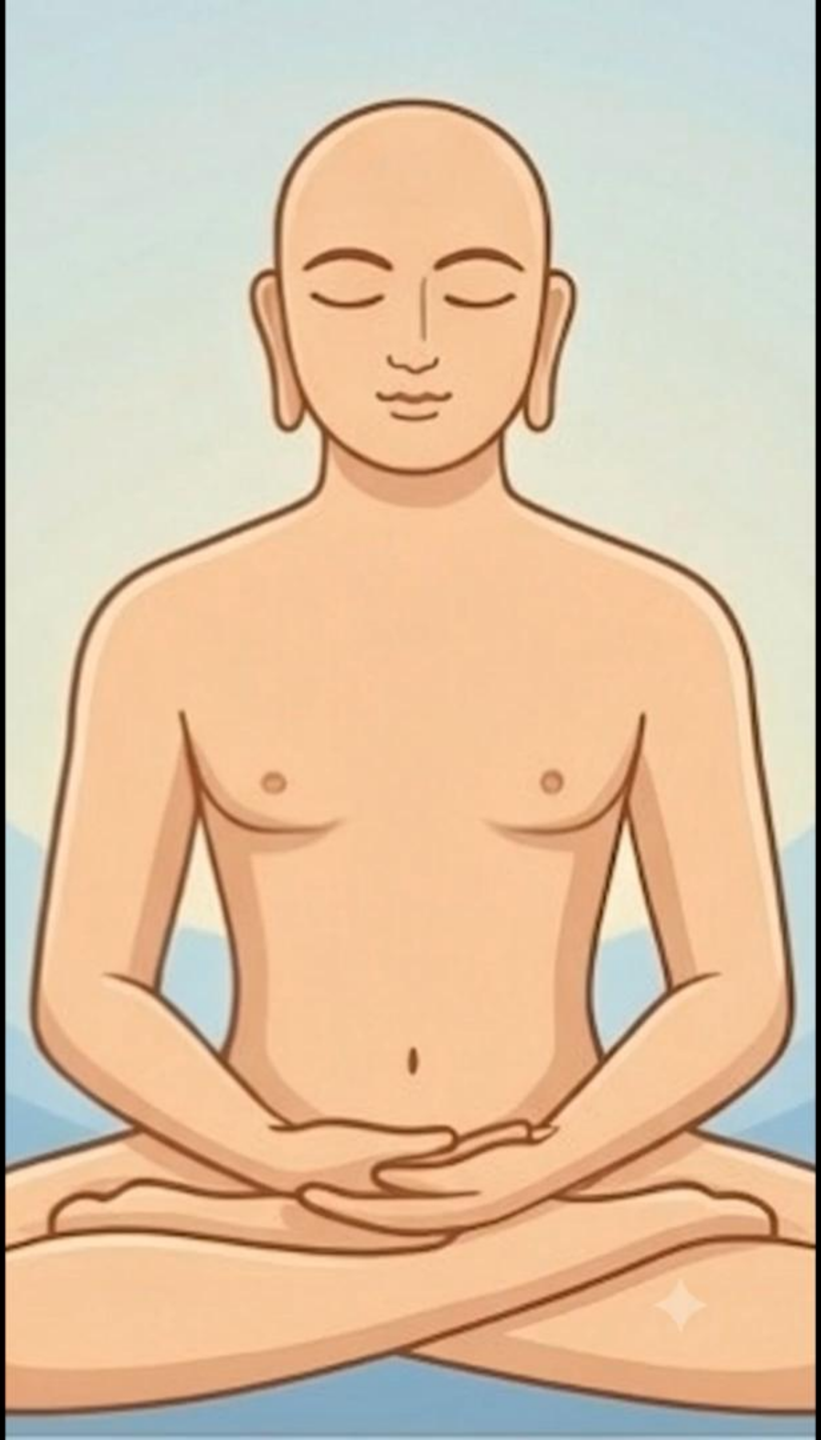

क्षीणकषाय
गुणस्थान

क्षीणकषाय गुणस्थान का सार

- क्षीणकषाय (१२वाँ गुणस्थान) वह सर्वोच्च वीतराग अवस्था है जिसे जीव १०वें 'सूक्ष्म-सांपराय गुणस्थान' के अंत में मोहनीय कर्म (चारित्र मोह) का सर्वथा नाश करने के बाद प्राप्त करता है।
- इस गुणस्थान की संपूर्ण प्रक्रिया और विशेषताओं का सार इस प्रकार है:
- 1. पूर्ण शुद्धता और वीतराग दशा: मोहनीय कर्म का निःशेष (पूर्ण) क्षय हो जाने के कारण क्षपक जीव के भाव स्फटिक के पात्र में रखे निर्मल जल के समान अत्यंत स्वच्छ हो जाते हैं। इस अवस्था में जीव वीतराग निर्ग्रन्थ कहलाता है और यथाख्यात-विहार शुद्धि संयम (यथाख्यात चारित्र) को प्राप्त कर लेता है।
- 2. बंध और आस्रव की स्थिति: कर्मों की स्थिति (duration) और अनुभाग (intensity) बंध का मुख्य कारण 'कषाय' (passions) है। चूँकि यहाँ कषायों का पूर्ण अभाव हो चुका है, इसलिए जीव को स्थिति और अनुभाग बंध नहीं होता। केवल 'योग' (मन, वचन, काय की चंचलता) का सद्भाव होने के कारण मात्र 'साता वेदनीय' कर्म का प्रकृति और प्रदेश बंध होता है, जिसे ईर्यापथ आस्रव कहते हैं।
- 3. गुणश्रेणी और कांडक घात: क्षीणकषाय जीव मोहनीय के अलावा शेष बचे हुए ६ कर्मों (ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय, नाम, गोत्र और अंतराय) का अपकर्षण करके उनकी गुणश्रेणी और उपरितन स्थिति में निक्षेपण करता है। इस काल के 'संख्यात बहुभाग' समय में इन ६ कर्मों के संख्यात हजार स्थिति-कांडक पूर्ण होते हैं। जब क्षीणकषाय काल का केवल 'संख्यातवाँ भाग' शेष रहता है, तब जीव अंतिम स्थिति-कांडकघात करता है।

क्षीणकषाय गुणस्थान का सार

- 4. शुक्ल ध्यान की अवस्था: इस गुणस्थान में मुनिराज शुक्ल ध्यान के दो विशिष्ट चरणों में लीन होते हैं: प्रारंभिक काल (संख्यात बहुभाग काल): इसमें जीव 'पृथक्त्व वितर्क वीचार' नामक शुक्ल ध्यान ध्याते हैं (जिसमें योगों और विषयों का परिवर्तन होता है) ।
- अंतिम काल (संख्यातवाँ भाग): इसमें जीव 'एकत्व वितर्क अवीचार' नामक शुक्ल ध्यान ध्याते हैं (जहाँ एक ही विषय पर बिना किसी परिवर्तन के स्थिर ध्यान होता है) ।
- 5. कृतकृत्य छद्मस्थ अवस्था: क्षीणकषाय गुणस्थान के अंतिम चरणों में ३ घाति कर्मों (ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अंतराय) के अंतिम कांडक का पतन (नाश) होने पर जीव को 'कृतकृत्य छद्मस्थ' कहा जाता है । इसका अर्थ है कि अब इन कर्मों का कोई और स्थिति-कांडकघात शेष नहीं रहा, केवल उदीरणा बाकी है ।
- 6. घातिया का सत्त्व नाश : इस गुणस्थान के अंत के ठीक एक समय पूर्व समय में दर्शनावरण कर्म की 'निद्रा' और 'प्रचला' प्रकृतियों की उदय और सत्त्व (सत्ता) से पूर्ण व्युच्छित्ति (नाश) हो जाती है । और अंत में शेष घातिया की 14 प्रकृतियों की उदय और सत्त्व (सत्ता) से पूर्ण व्युच्छित्ति (नाश) हो जाती है ।
- संक्षेप में, यह वह पूर्ण वीतराग और ध्यानस्थ अवस्था है जहाँ जीव अपने घाति कर्मों की अंतिम जड़ों को नष्ट करके कृतकृत्य हो जाता है और केवलज्ञान (१३वें गुणस्थान) की प्राप्ति के ठीक द्वार पर खड़ा होता है।

से काले सो खीणकसाओ ठिदिरसगबंधपरिहीणो ।
सम्मत्तडवस्सं वा, गुणसेढी दिज्जं दिस्सं च ॥601॥

- अन्वयार्थ: (से काले) अनन्तर काल में (सो) वह जीव (खीणकसाओ) क्षीणकषायी होता है।
- (ठिदिरसगबंधपरिहीणो) वह स्थितिबंध और अनुभाग बंध से रहित होता है।
- (सम्मत्तडवस्सं वा) जब सम्यक्त्व प्रकृति की आठ वर्षप्रमाण स्थिति रहती है तब जिस प्रकार वर्णन किया उसी प्रकार यहाँ (गुणसेढी दिज्जं दिस्सं च) गुणश्रेणि, देयद्रव्य और दृश्यमान द्रव्य का कथन जानना चाहिए। ॥601॥

www.JainKosh.org

क्षीणकषाय गुणस्थान

संपूर्ण मोहनीय कर्म का क्षय होने पर क्षपक जीव द्रव्य और भाव कषाय का क्षय होने से क्षीणकषाय संज्ञा को प्राप्त होता है ।

जैसे पूर्व में उदय-व्युच्छिन्न कर्म की उच्छिष्टावली एवं नवक समयप्रबद्ध शेष रह जाते थे, वैसे यहाँ सूक्ष्म कृष्टि की कोई उच्छिष्टावली एवं नवक समयप्रबद्ध नहीं है ।

मोहनीय का बंध अनिवृत्तिकरण में ही बंध-व्युच्छिन्न हो जाता है । अतः सूक्ष्म-सांपराय में बंध नहीं होने से क्षीणकषाय में नवक समयप्रबद्ध की संभावना ही नहीं है ।

सूक्ष्म कृष्टियों की उदय स्थिति सूक्ष्मसांपराय के काल प्रमाण ही रखकर शेष का कांडकघात द्वारा घात किया जा चुका था । सूक्ष्मसांपराय के काल के ऊपर सूक्ष्म कृष्टि का अस्तित्व ही नहीं होने से सूक्ष्म कृष्टियों की उच्छिष्टावली भी संभव नहीं है ।

क्षीणकषाय गुणस्थान

मोहकर्म का नि:शेष क्षय होने से जिसका चित्त स्फटिक के पात्र में रखे निर्मल जल के समान स्वच्छ हुआ है, ऐसे निर्ग्रन्थ साधुओं को क्षीणकषाय संयत कहते हैं ।

यहाँ वीतराग निर्ग्रन्थ, यथाख्यात-विहार शुद्धि संयमी होता है ।

स्थिति, अनुभाग बंध का कारण कषाय है । इसलिए कषायरहित क्षीणकषायी को स्थिति-अनुभाग बंध का अभाव हुआ ।

योग का सद्भाव होने से मात्र साता का प्रकृति-प्रदेश बंध होता है । यह ईर्यापथ आस्रव कहलाता है ।

क्षीण कषाय में गुणश्रेणी

क्षीणकषाय जीव 6 कर्मों का अपकर्षण कर गुणश्रेणि तथा उपरितन स्थिति में देता है ।

$$\text{गुणश्रेणी का आयाम} = \text{क्षीणकषाय का काल} + \frac{\text{क्षीणकषाय काल}}{\text{संख्यात}}$$

$$\text{गुणश्रेणि द्रव्य} = \frac{\text{अपकृष्ट द्रव्य}}{\text{पल्य/असंख्यात}}$$ और उपरितन स्थिति का द्रव्य = शेष बहुभाग

गुणश्रेणि का द्रव्य उदय निषेक से गुणश्रेणीशीर्ष तक असंख्यात गुणित क्रम से देता है ।

उपरितन स्थिति के द्रव्य को 'मध्यमधन' आदि सूत्रों से देता है ।

शीर्ष के ऊपर प्रथम निषेक में शीर्ष से असंख्यात गुणा द्रव्य देता है । द्वितीयादि निषेकों में चयहीन क्रम से द्रव्य देता है ।

यह सब विधान जिस प्रकार सम्यक्त्व प्रकृति की स्थिति आठ वर्ष प्रमाण करने पर कहा था, वैसा ही जानना ।

गुणश्रेणि का द्रव्य

सूक्ष्म-सांपराय के अंतिम समय के अपकृष्ट द्रव्य से क्षीणकषाय के प्रथम समय का अपकृष्ट द्रव्य असंख्यात गुणा है । क्योंकि यहाँ कषायरहित परिणाम से होने वाली निर्जरा है ।

द्वितीयादि समयों में अपकृष्ट द्रव्य का प्रमाण समान ही है क्योंकि यहाँ विशुद्धता समान होती है ।

यहाँ ज्ञानावरण आदि 6 कर्मों की प्रथम कांडक से द्विचरम कांडक तक अवस्थित गुणश्रेणी होती है । अंतिम कांडक में गलितावशेष गुणश्रेणी होती है ।

क्षीणकषाय में ध्यान

शुक्ल ध्यान	स्वरूप	काल
पृथक्त्व वितर्क वीचार	पृथक्त्व = भिन्न-भिन्न में; वितर्क = भावश्रुत ज्ञान के बल से; वीचार = परिवर्तन सहित	प्रथम समय से अंतर्मुहूर्त (संख्यात बहुभाग काल)
एकत्व वितर्क अवीचार	एकत्व = एक में; वितर्क = भावश्रुत ज्ञान के बल से; अवीचार = परिवर्तन रहित	अंतिम संख्यातवां भाग

घादीण मुहुत्तंतं, अघादियाणं असंखगा भागा ।
ठिदिखंडं रसखंडो, अणंतभागा अपसत्थाणं ॥602॥

- अन्वयार्थ: क्षीणकषाय गुणस्थान में (घादीण) घाति कर्मों का (ठिदिखंडं) स्थितिकांडकायाम (मुहुत्तंतं) अन्तर्मुहूर्त प्रमाण और (अघादियाणं) अघाति कर्मों का स्थितिकांडक (असंखगा भागा) असंख्यात बहुभाग प्रमाण है।
- (अपसत्थाणं) अप्रशस्त प्रकृतियों का (रसखंडो) अनुभाग कांडकायाम (अणंतभागा) अनन्तबहुभाग प्रमाण है ॥602॥

क्षीणकषाय में स्थिति-अनुभाग कांडक का आयाम

कर्म	कांडक	आयाम
3 घाति कर्म	स्थिति का	अंतर्मुहूर्त
3 अघाति कर्म	स्थिति का	असंख्यात बहुभाग
अप्रशस्त कर्म	अनुभाग का	अनंत बहुभाग

www.JainKosh.org

बहुठिदिखंडे तीदे, संखा भागा गदा तदद्धाए ।
चरिमं खंडं गिण्हदि, लोभं वा तत्थ दिज्जादि ॥603॥

- अन्वयार्थ: (बहुठिदिखंडे तीदे) बहुत (संख्यात हजार) स्थितिकाण्डक व्यतीत होने पर (तदद्धाए) क्षीणकषाय गुणस्थान काल का (संखा भागा) संख्यात बहुभाग काल (गदा) व्यतीत हुआ तब (चरिमं खंडं) अंतिम स्थितिकांडक को (गिण्हदि) ग्रहण करता है।
- (तत्थ) वहां (दिज्जादि) देयादि द्रव्य का विधान (लोभं वा) लोभ के समान जानना चाहिए ॥603॥

क्षीणकषाय का अंतिम कांडक

क्षीणकषाय गुणस्थान के संख्यात बहुभाग काल में 6 कर्मों के संख्यात हजार स्थितिकांडक पूर्ण होते हैं ।

संख्यातवां भाग काल शेष रहने पर अंतिम स्थितिकांडक करता है ।

इसके 3 घाति कर्मों के कांडक का प्रमाण अंतर्मुहूर्त प्रमाण होता है । क्षीणकषाय के काल ऊपर शेष रही सारी स्थिति को कांडकायाम में ग्रहण करता है । अघाति कर्मों का स्थितिकांडक का आयाम पूर्ववत् ही रहता है ।

तीनों घाती कर्मों के कांडक द्रव्य को देने का विधान लोभ में कहे विधान अनुसार जानना चाहिए ।

कांडक का पतन होने पर क्षीणकषाय का अंतर्मुहूर्त काल शेष रहता है । तीन घाति कर्म की स्थिति भी इतनी ही शेष रहती है ।

3 घाती कर्मों की स्थिति

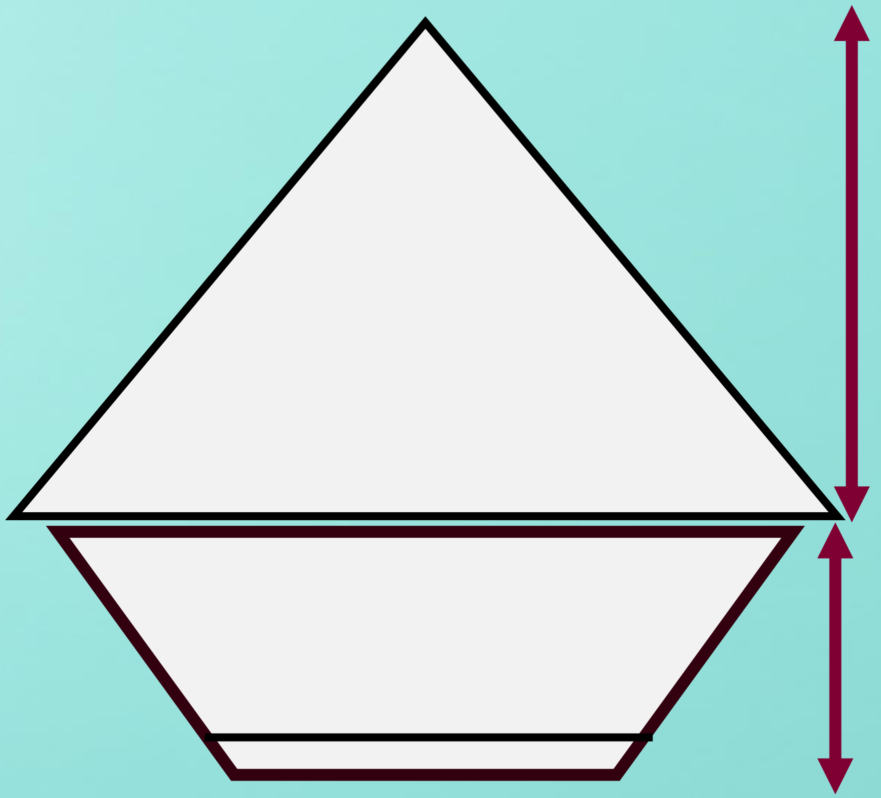

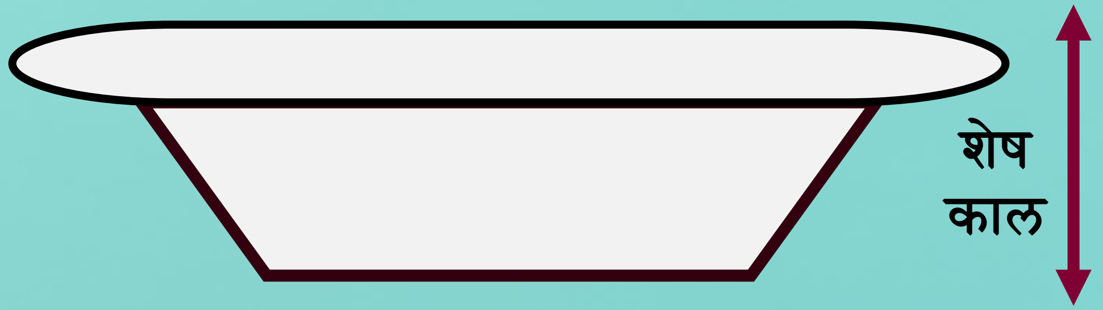

कृतकृत्य छद्मस्थ

अंतिम फाली में

अंतिम फाली के पश्चात्

www.JainKosh.org

कृतकृत्य छद्मस्थ

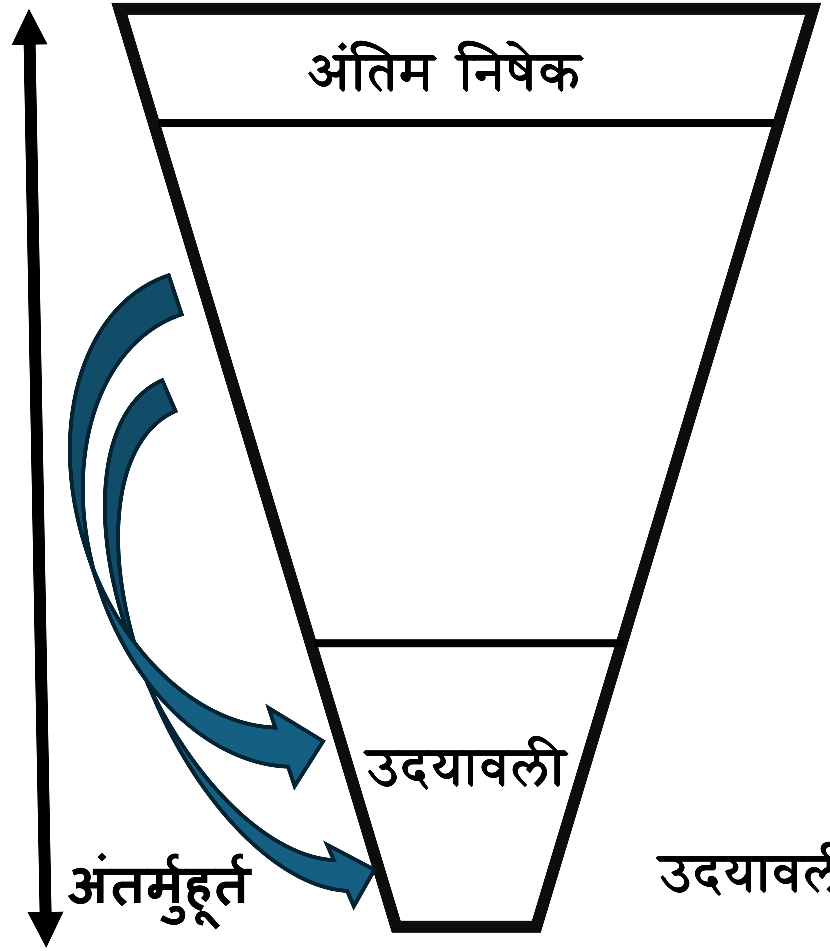

अंतिम उदीरणा

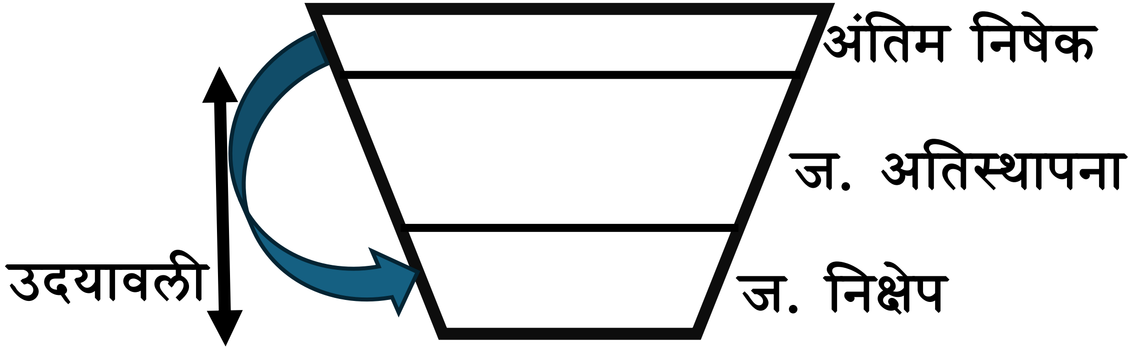

अंतिम उदयावली

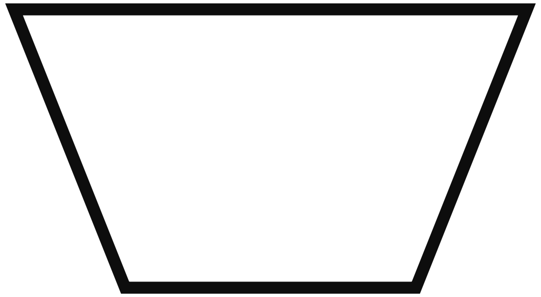

चरिमे खंडे पडिदे, कदकरणिज्जोत्ति भणदे एसो ।
तस्स दुचरिमे णिद्दा, पयला सत्तुदयवोच्छिण्णा ॥604॥

- अन्वयार्थ: (चरिमे खंडे पडिदे) अंतिम काण्डक का पतन होने पर (एसो) इस क्षपक जीव को (कदकरणिज्जो त्ति) कृतकृत्य (भणदे) कहते हैं।
- (तस्स दुचरिमे) उस क्षीणकषाय के द्विचरम समय में (णिद्दा पयला) निद्रा और प्रचला (सत्तुदयवोच्छिण्णा) सत्त्व और उदय से व्युच्छिन्न होती हैं ॥604॥

कृतकृत्य छद्मस्थ

क्षीणकषाय में 3 घाति कर्मों के अंतिम कांडक के पतन होने पर क्षपक जीव को 'कृतकृत्य छद्मस्थ' कहते हैं । क्योंकि अब 3 घाति कर्मों का स्थितिकांडकघात नहीं होता है ।

अब उदयावली के बाहर स्थित द्रव्य की उदीरणा मात्र होती है ।

यह उदीरणा भी क्षीणकषाय गुणस्थान में (आवली+1) समय शेष रहने तक होती है ।

आवली मात्र शेष रहने पर क्रम से एक-एक निषेक का उदय मात्र होता है ।

क्षीणकषाय के द्विचरम समय में निद्रा-प्रचला की उदय और सत्त्व व्युच्छित्ति हो जाती है ।

शंका – क्षीणकषायी जीव तो ध्यानस्थ है । उनके निद्रा, प्रचला का उदय कैसे संभव है ?

समाधान – ध्यानयुक्त अवस्था में भी निद्रा और प्रचला का अव्यक्त उदय संभव है ।

शुक्ल ध्यान संबंधी विशेषता

स्वामी	ध्यान	विशेषता	संहनन
उपशांत कषायी	पृथक्त्व वितर्क वीचार	पूर्वविद्, 3 योगी, शुक्ललेश्यी	प्रथम तीन
क्षीण कषायी	पृथक्त्व वितर्क वीचार	पूर्वविद्, 3 योगी, शुक्ललेश्यी	प्रथम
क्षीण कषायी	एकत्व वितर्क अवीचार	पूर्वविद्, एकयोगी, शुक्ललेश्यी	प्रथम

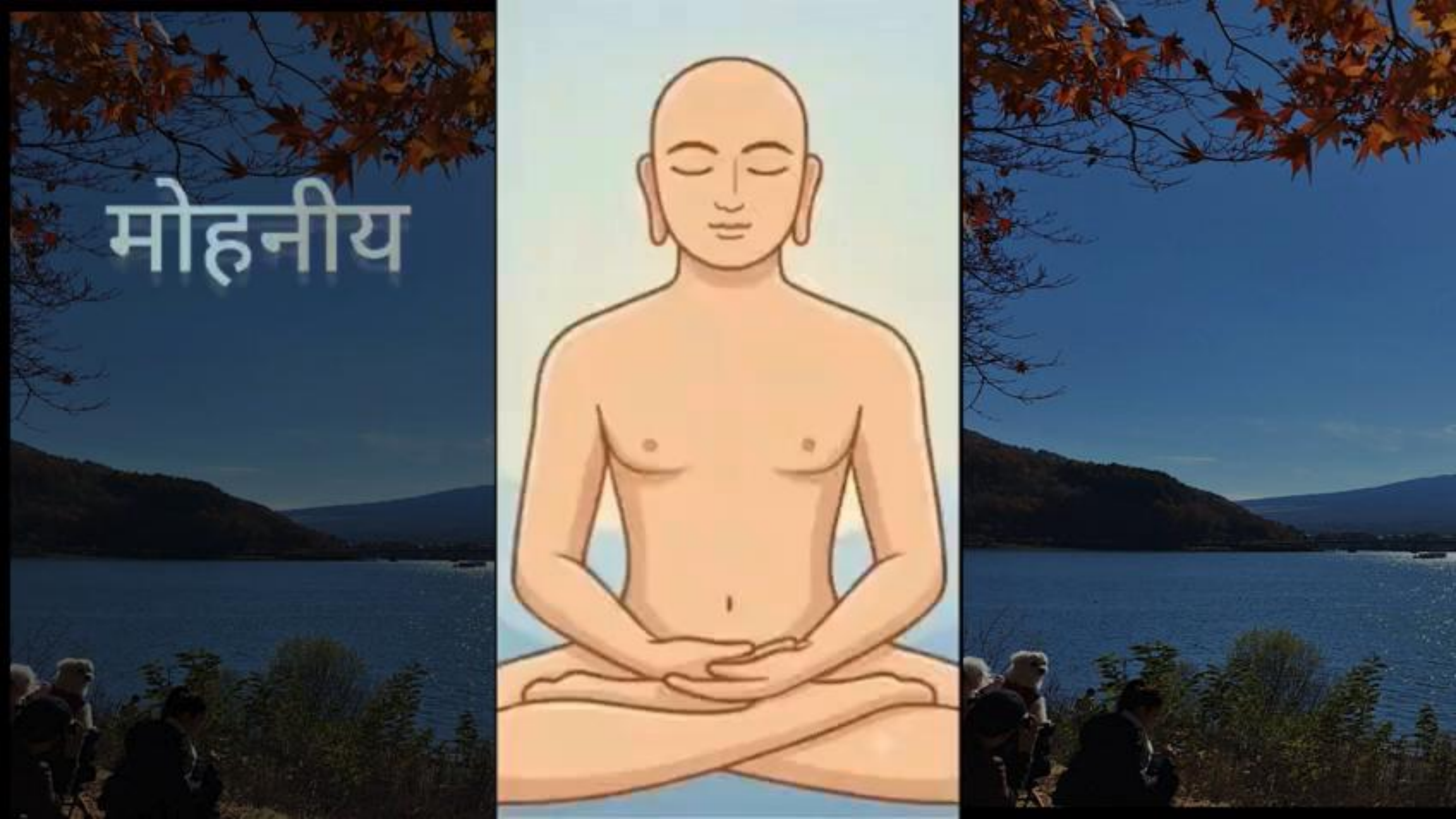
मोहनीय

कोहस्स य पढमठिदीजुत्ता कोहादिएक्कदोतीहिं ।
खवणद्धा हि कमसो, माणतियाणं तु पढमठिदी ॥605॥

- अन्वयार्थ: (कोहस्स य पढमठिदीजुत्ता) क्रोध की प्रथम स्थिति से सहित (कोहादिएक्क दोतीहिं) क्रोधादि एक, दो, तीन कषायों का (खवणद्धा) क्षपणाकाल (कमसो) क्रम से (माणतियाणं तु) मानादि तीन कषायों की (पढमठिदी) प्रथम स्थिति होती हैं ॥605॥

www.JainKosh.org

भिन्न कषायोदय से श्रेणी पर आरोहण

पूर्वोक्त सारी प्ररूपणा पुरुषवेद, संज्वलन क्रोध के उदय से श्रेणी पर आरूढ़ जीव की अपेक्षा कही है । यह एक प्रकार है ।

इसी प्रकार पुरुषवेद के साथ संज्वलन मान, माया या लोभ के उदय से श्रेणी चढ़ने पर 3 प्रकार और होते हैं ।

ऐसे ही स्त्रीवेद और 4 संज्वलन के उदय से श्रेणी आरोहण करने वाले 4 प्रकार के जीव हैं ।

इसी प्रकार नपुंसकवेद और 4 संज्वलन के उदय से श्रेणी आरोहण करने वाले 4 प्रकार के जीव हैं ।

इस तरह कुल 12 प्रकार हुए ।

12 प्रकार से श्रेणी आरोहण

पुरुषवेदी मुनिराज

स्त्रीवेदी मुनिराज

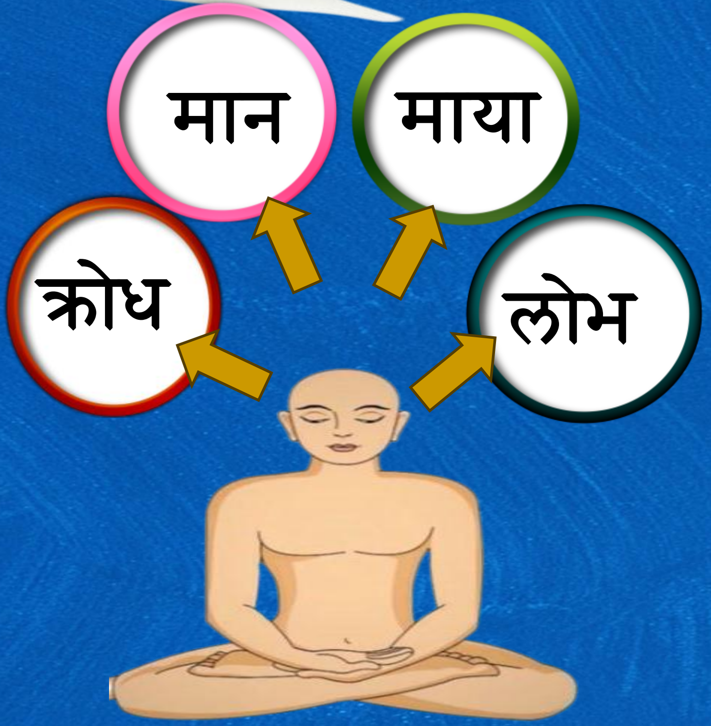

नपुंसकवेदी मुनिराज

प्रथम स्थिति का प्रमाण

पुरुषवेदयुक्त मान आदि कषाय सहित श्रेणि चढ़ने वाले जीव के अध:प्रवृत्त करण से अंतरकरण की समाप्ति तक सर्व प्ररूपणा पुरुषवेद और क्रोध कषाय से श्रेणि चढ़ने वाले जीव के समान है । इसके पश्चात् प्रथम स्थिति में भेद है।

जिस कषायोदय से श्रेणि चढ़ता है, उसी कषाय की अंतरकरण के पश्चात् प्रथम स्थिति स्थापित करता है ।

क्रोधोदय सहित श्रेणि चढ़ने वाले के जो क्रोध की प्रथम स्थिति तथा क्रोध का क्षपणा काल (बादर संग्रह कृष्टि वेदक काल) है, मान कषायोदय सहित श्रेणि चढ़ने वाला जीव उतनी मान की प्रथम स्थिति रखता है ।

माया कषायोदय से श्रेणि चढ़ने वाला जीव उतनी माया की प्रथम स्थिति रखता है, जितना क्रोध कषायोदय से श्रेणि चढ़ने वाले जीव का (क्रोध की प्रथम स्थिति + क्रोध क्षपणा काल + मान क्षपणा काल) है ।

लोभोदय से श्रेणि चढ़ने वाला जीव उतनी लोभ की प्रथम स्थिति रखता है, जितना क्रोध कषायोदय से श्रेणि आरोहक जीव का (क्रोध की प्रथम स्थिति + क्रोध, मान, माया का क्षपणा काल) है ।

चार कषायों की प्रथम स्थिति का प्रमाण

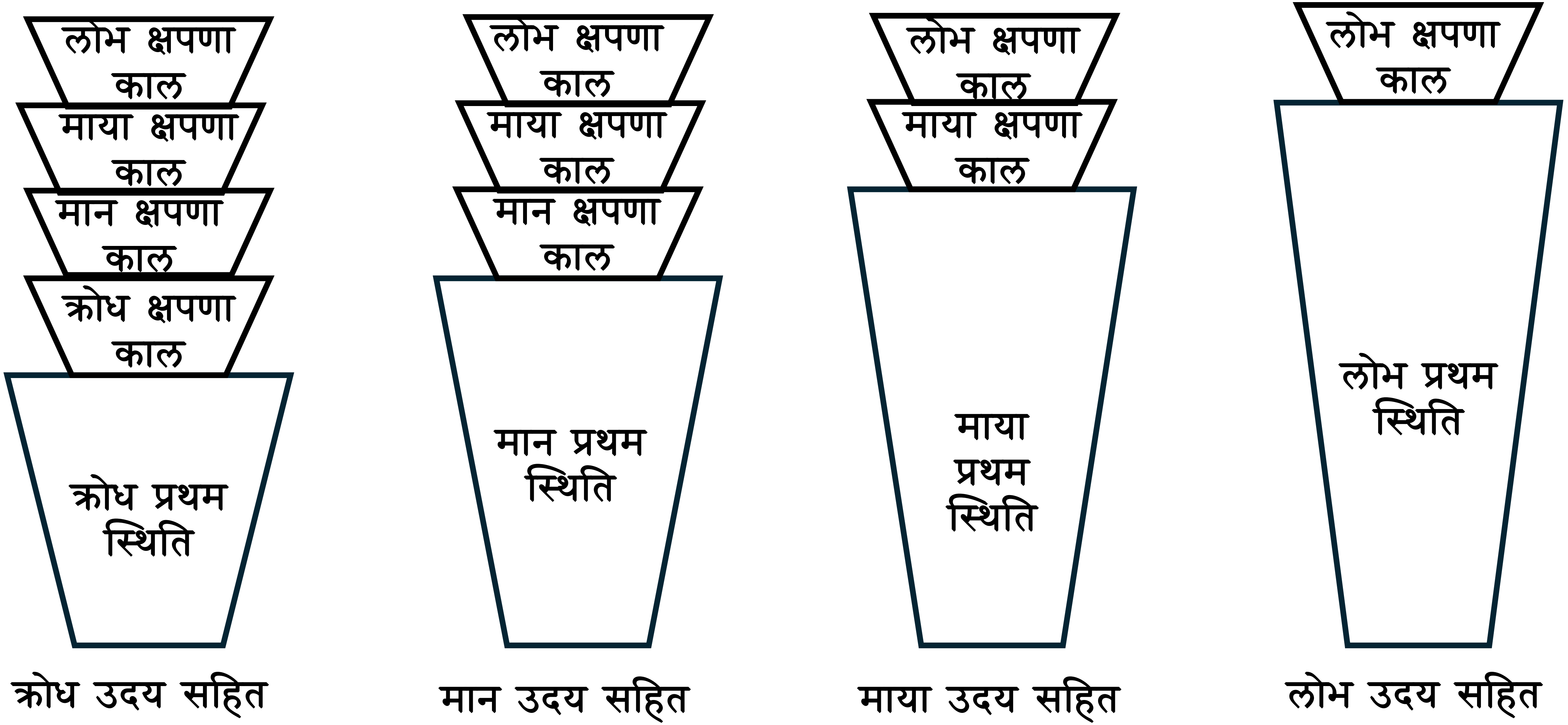

माणतियाणुदयमहो, कोहादिगिदुतिय खवियपणिधम्हि ।
हयकण्णकिट्टिकरणं, किच्चा लोहं विणासेदी ॥606॥

- अन्वयार्थ: (माणतियाणुदयमहो) मानादि तीन कषायों के उदय से श्रेणी आरोहण करने वाला (कोहादिगिदुतिय) क्रोधादि एक, दो, तीन कषायों के (खवियपणिधम्हि) क्षपणाकाल के निकट (याने क्षपणा करके) (हयकण्णकिट्टिकरणं) अश्वकर्णकरण और कृष्टिकरण (किच्चा) करके (लोहं) लोभ का (विणासेदि) विनाश करता है ॥606॥

www.JainKosh.org

<table>
<tr><th>क्रोधादय सहित श्रेणि</th><th>मानोदय सहित श्रेणि</th><th>मायोदय सहित श्रेणी</th><th>लोभोदयसहित श्रेणी</th></tr>
<tr><td>यह जीव जिस समय अश्वकर्णकरण और अपूर्वस्पर्धक करता है ।</td><td colspan="3">उस समय यह पूर्वस्पर्धकरूप क्रोध को मानकषाय रूप परिणमाकर क्षय करता है ।</td></tr>
<tr><td>जब यह क्रोध आदि 4 कषायों की बादर कृष्टि करता है,</td><td>तब अश्वकर्णकरण सहित अपूर्वस्पर्धक क्रिया करता है ।</td><td colspan="2">उस समय यह पूर्वस्पर्धकरूप मान को माया कषाय रूप परिणमाकर क्षय करता है ।</td></tr>
<tr><td>जब यह क्रोध की 3 संग्रह कृष्टि का वेदन कर क्षय करता है,</td><td>तब यह मानादि 3 कषायों की बादर कृष्टि करता है ।</td><td>तब यह अश्वकर्णकरण सहित अपूर्वस्पर्धक क्रिया करता है ।</td><td>तब यह पूर्वस्पर्धकरूप माया को लोभ कषाय रूप परिणमाकर क्षय करता है।</td></tr>
<tr><td>जब यह मान की 3 संग्रह कृष्टि का वेदन कर क्षय करता है,</td><td rowspan="2">यहाँ से क्रोधोदय के समान जानना ।</td><td>तब यह माया, लोभ की बादर कृष्टि करता है ।</td><td>तब यह अश्वकर्णकरण सहित अपूर्वस्पर्धक क्रिया करता है ।</td></tr>
<tr><td>जब यह माया की 3 संग्रह कृष्टि का वेदन कर क्षय करता है,</td><td>यहाँ से क्रोधोदय के समान जानना ।</td><td>तब यह लोभ कषाय की बादर कृष्टि करता है ।</td></tr>
</table>

भिन्न कषाय से आरूढ़ 4 प्रकार के जीव

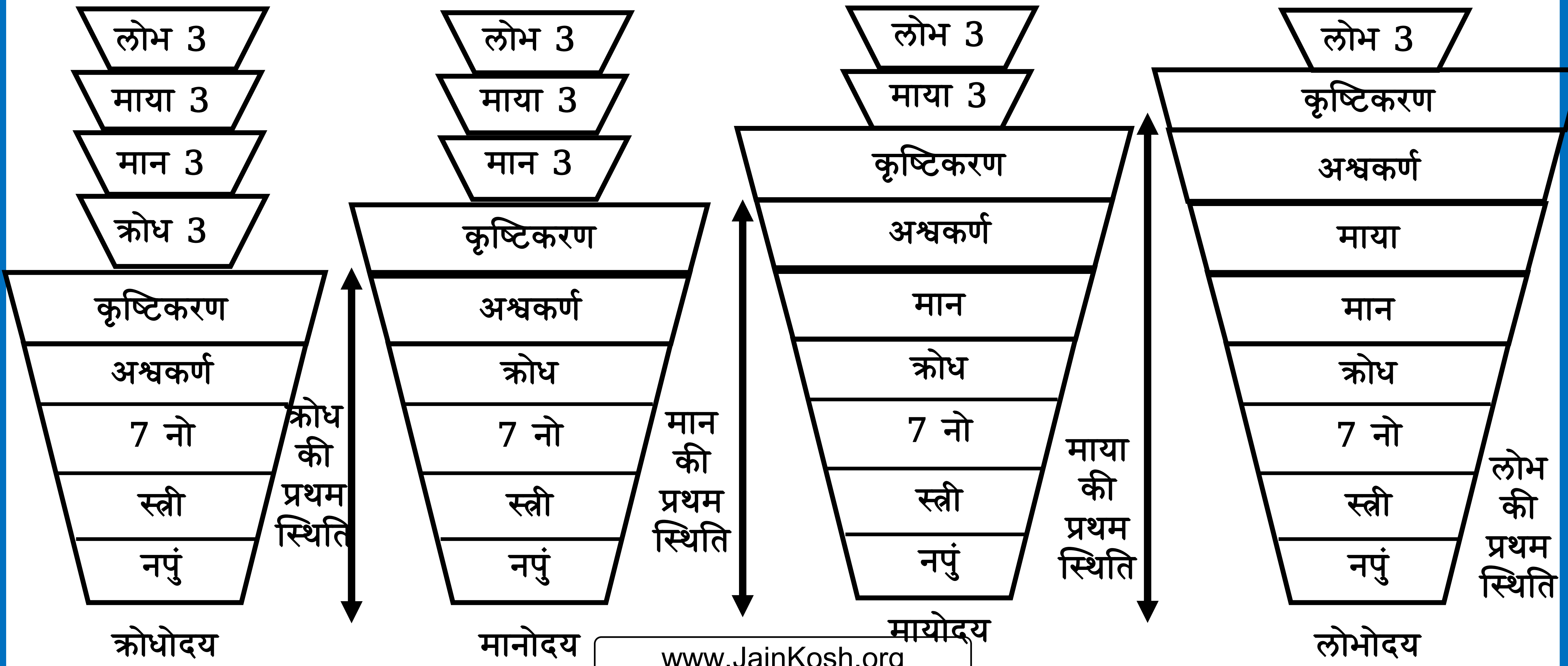

www.JainKosh.org

संक्षेप में

जिस कषाय के उदय से श्रेणि चढ़ता है, उससे पूर्व की कषायों का पूर्व स्पर्धकरूप से ही क्रम से नाश करता है ।

यह क्षय अपूर्व स्पर्धक क्रिया के पहले ही करता है । उसके पश्चात् शेष कषायों के अपूर्व स्पर्धक एवं कृष्टिकरण क्रिया करके उन्हें क्रम से नष्ट करता है ।

सभी का लोभ कषाय का सूक्ष्मकृष्टिकरण काल समान ही है ।

इस प्रकार भिन्न कषायोदय से श्रेणि आरोहक के प्रथम स्थिति एवं कषायों के क्षय के क्रम की भिन्नता होती है ।

www.JainKosh.org

प्रश्न- अनिवृत्तिकरण परिणामों में भेद नहीं होने पर भी इस प्रकार क्रिया-विपर्यास (विपरीतता) कैसे हुआ ?

उत्तर- भिन्न कषायों के उदय के सहकारी कारणों के सान्निध्य से इस प्रकार की विविधता होती है ।

इस प्रकार पुरुषवेद सहित क्रोधादि कषायोदय से श्रेणि चढ़ने वाले चार प्रकार के जीवों का वर्णन किया ।

www.JainKosh.org

पुरिसोदएण चडिदस्सित्थीखवणद्धउ त्ति पढमठिदी ।
इत्थिस्स सत्तकम्मं, अवगदवेदो समं विणासेदि ॥607॥

- अन्वयार्थ: (पुरिसोदएण चडिदस्सित्थी खवणद्धउ त्ति) पुरुषवेद के उदय से श्रेणि चढ़नेवाले जीव का जो स्त्रीवेद का क्षपणाकाल है वहाँ तक (इत्थिस्स) स्त्रीवेद की (पढमठिदी) प्रथम स्थिति है और वह (अवगदवेदो) अपगतवेदी होकर (सत्तकम्मं) सात नोकषाय कर्मों का (समं) एक ही समय में (विणासेदि) नाश करता है ॥607॥

स्त्रीवेदोदय से श्रेणी आरोहण में विशेषता

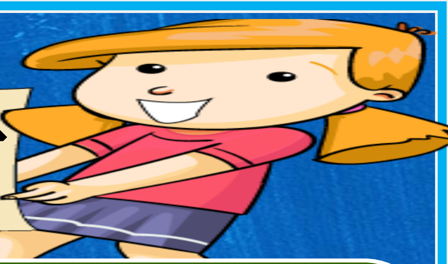

स्त्रीवेद के उदय के साथ क्रोधादि कषायों के उदय से श्रेणी आरूढ़ जीव के पुरुषवेद के समान ही वर्णन है । इतना विशेष है कि –

1. अंतरकरण के समय जब स्त्रीवेद का अंतर करता है, तब स्त्रीवेद की प्रथम स्थिति (नपुंसक वेद + स्त्रीवेद का क्षपणा काल) प्रमाण स्थापित करता है ।
2. स्त्रीवेद की क्षपणा होते ही अपगतवेदी हो जाता है ।
3. अपगतवेदी होने पर पुरुषवेद का बंध भी व्युच्छिन्न हो जाता है ।
4. अपगतवेदी होकर 7 नोकषायों की क्षपणा युगपत् पूर्ण करता है, किसी नवक समयप्रबद्ध की अलग से क्षपणा करने की आवश्यकता नहीं होती ।

www.JainKosh.org

• इसके पश्चात् अश्वकर्ण आदि क्रियाओं में जिस प्रकार पुरुषवेद सहित श्रेणि

थीपढमट्ठिदिमेत्ता, संढस्स वि अंतरादु संढेक्क ।
तस्सद्धा त्ति तदुवरिं, संढं इत्थिं च खवदि थीचरिमे ॥608॥

- अन्वयार्थ: (संढस्स वि) नपुंसकवेद की प्रथम स्थिति भी (थीपढमट्ठिदिमेत्ता) स्त्रीवेद की प्रथम स्थिति के समान ही है।
- (अंतरादु) अंतरकरण के पश्चात् (संढेक्क) एक नपुंसकवेद का (तस्सद्धा त्ति) उसके क्षपणाकाल तक क्षय करके (तदुवरिं) उसके ऊपर (थीचरिमे) स्त्रीवेद के क्षपणाकाल के अंतिम समय में (संढं) नपुंसकवेद (च) और (इत्थिं) स्त्रीवेद का युगपत् (खवदि) क्षय करता है ॥608॥

अवगयवेदो संतो, सत्त कसाये खवेदि कोहुदये ।
पुरिसुदये चडणविही, सेसुदयाणं तु हेट्ठुवरिं ॥609॥

- अन्वयार्थ: (अवगयवेदो संतो) अपगतवेदी होकर (सत्त कसाये) सात नोकषायों का (खवेदि) क्षय करता है।
- (सेसुदयाणं तु) शेष वेद और कषायों के उदय से चढ़ने वाले की (हेट्ठुवरिं) इसके नीचे और ऊपर (चडणविही) चढ़ने की विधि (पुरिसुदये कोहुदये) पुरुषवेद के उदय से और क्रोध के उदय से श्रेणि चढ़नेवाले क्षपक के समान है ॥609॥

नपुंसक वेदोदय से श्रेणी आरोहण में विशेषता

नपुंसकवेद के उदय के साथ क्रोधादि कषाय से श्रेणी पर आरूढ़ जीव अंतरकरण के समय जब नपुंसकवेद का अंतर करता है, तब नपुंसकवेद की प्रथम स्थिति (नपुंसक वेद + स्त्रीवेद का क्षपणा काल) प्रमाण स्थापित करता है ।

अंतरकरण के पश्चात् नपुंसकवेद की क्षपणा प्रारंभ करता है ।

नपुंसकवेद के क्षपणा काल तक इसकी क्षपणा पूरी नहीं होती ।

अनंतर समय में स्त्रीवेद की क्षपणा भी प्रारंभ हो जाती है ।

तब नपुंसकवेद और स्त्रीवेद – इन दोनों की युगपत् क्षपणा चल रही है ।

नपुंसक वेदोदय से श्रेणी आरोहण में विशेषता

जब स्त्रीवेद का क्षपणा काल समाप्त होता है, तब ही नपुंसकवेद और स्त्रीवेद दोनों की युगपत् क्षपणा पूर्ण करता है ।

यह ही नपुंसकवेद के उदय का अंतिम समय है ।

अनंतर समय में अपगतवेदी हो जाता है । तब पुरुषवेद की बंध-व्युच्छित्ति भी हो जाती है ।

अपगतवेदी होकर 7 नोकषायों को एक साथ क्षपित करता है ।

शेष भंग पुरुषवेद के समान हैं ।

भिन्न वेद से आरूढ़ के वेद की प्रथम स्थिति

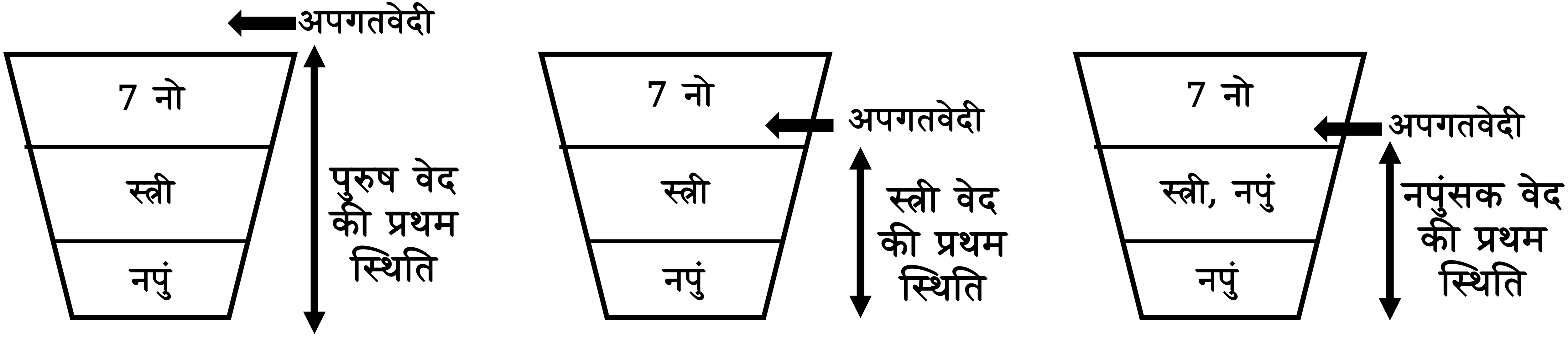

पुरुष वेद से चढ़ा हुआ

स्त्री वेद से चढ़ा हुआ

नपुंसक वेद से चढ़ा हुआ

- Reference : श्री लब्धिसार टीकासहित अनुवाद – ब्र. सुजाता रोटे, बाहुबली (वर्तमान में आर्यिका श्री शुद्धोहंश्री माताजी)
- For updates / feedback / suggestions, please contact
  - Sarika Jain, sarikam.j@gmail.com
  - www.jainkosh.org
  - ☎: 94066-82889

- इसी विषय के विडियो लेक्चर हमारे चैनल पर उपलब्ध हैं । आप अवश्य लाभ लें । www.Jainkosh.org/wiki/Videos पेज पर जाएँ एवं लब्धिसार की प्लेलिस्ट चुनें ।